# वेद्मन्त्राः

## Colophon

This document was typeset using X<sub>H</sub>L<sup>A</sup>T<sub>E</sub>X, and uses the Sanskrit 2003 font extensively. It also uses several L<sup>A</sup>T<sub>E</sub>X macros designed by H. L. Prasād.

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

# अनुक्रमणिका

| महान्यासः  | 1  |
|--|----|
| पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् | 1  |
| पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम्    | 3  |
| केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः                          | 5  |
| मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः      | 10 |
| पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः               | 11 |
| हंसगायत्री   | 12 |
| दिक् सम्पुटन्यासः                                      | 13 |
| षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्                                    | 17 |
| गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः             | 20 |
| आत्मरक्षा  | 21 |
| शिवसङ्कल्पः  | 22 |
| पुरुषसूक्तम्   | 27 |
| उत्तरनारायणम्  | 28 |
| अप्रतिरथम्   | 29 |
| प्रतिपूरुषम् (सं॰)                                     | 31 |
| प्रतिपूरुषम् (ब्रा॰)                                   | 31 |
| शतरुद्रीयम् (सं॰)                                      | 32 |
| शतरुद्रीयम् (ब्रा॰)                                    | 35 |
| पञ्चाङ्गम्   | 36 |
| अष्टाङ्ग-नमस्काराः                                     | 37 |

| लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम्  | 38 |
|------------------------------|----|
| लघुन्यासे देवता-स्थापनम्     | 39 |
| कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् | 41 |
| षोडशोपचार पूजा               | 41 |
| श्रीरुद्रनाम त्रिशती         | 41 |
| प्रदक्षिणम्                  | 48 |
| नमस्काराः                    | 49 |
| चमकानुवाकैः प्रार्थना        | 51 |
| प्रार्थना                    | 55 |
| श्रीरुद्रजपः                 | 55 |
| ध्यानम्                      | 56 |
| रुद्रप्रश्नः                 | 57 |
| चमकप्रश्नः                   | 64 |
| रुद्रप्रश्नः                 | 71 |
| चमकप्रश्नः                   | 78 |
| पुरुषसूक्तम्                 | 82 |
| नारायणसूक्तम्                | 83 |
| विष्णुसूक्तम्                | 85 |
| भूसूक्तम्                    | 85 |

| अनुक्रमणिका |
|-------------|
|-------------|

| दुर्गा सूक्तम्         | 87  |
|------------------------|-----|
| श्रीसूक्तम्            | 88  |
| मेधासूक्तम्            | 90  |
| भाग्यसूक्तम्           | 91  |
| पवमानसूक्तम्           | 91  |
| आयुष्यसूक्तम्          | 94  |
| नवग्रहसूक्तम्          | 95  |
| नक्षत्रसूक्तम्         | 98  |
| गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् | 104 |

#### ॥ महान्यासः ॥

## ॥ पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम्॥

ओङ्कारमन्त्रसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥ नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इर्षवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः॥ या त इर्षुः शिवर्तमा शिवं बभूवं ते धनुः। शिवा श्रिक्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥

(EAST)

कं खं गं घं छं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गरुद्राय नमः।

महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्। महापापहरं वन्दे तस्मै मकाराय नमो नमः॥२॥ अपैतु मृत्युरमृतंत्र आगेन्वैवस्वतो नो अभेयं कृणोतु। पुर्णं वनस्पतेरिवाभिनेः शीयताः रियः स चे तान्नः शचीपितः।

(SOUTH)

चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः।

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्। शिवमेकं परं वन्दे तस्मै शिकाराय नमो नमः॥३॥ ॐ। निर्धनपतये नमः। निर्धनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय नमः। ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यलिङ्गाय नमः। सुवर्णाय नमः। सुवर्णिलङ्गाय नमः। दिव्याय नमः। दिव्यालङ्गाय नमः। भवाय नमः। भवलिङ्गाय नमः। शर्वाय नमः। शर्वालङ्गाय नमः। शर्वालङ्गाय नमः। ज्वलाय नमः। शिवलङ्गाय नमः। ज्वलाय नमः। ज्वललङ्गाय नमः। ज्वललङ्गाय नमः। आत्माय नमः। आत्मलङ्गाय नमः। परमाय नमः। परमलिङ्गाय नमः। एतत्सोमस्यं सूर्यस्य सर्वलिङ्गां स्थापयति पाणिमन्त्रं पवित्रम्।

(WEST)

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गरुद्राय नमः।

वाहनं वृषभो यस्य वासुिकः कण्ठभूषणम्। वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवंनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमौ अस्तु॥

(NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गरुद्राय नमः।

> यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्। यिहाङ्गं पूजयेन्नित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायुस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्में पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय।

#### ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय नमः।



## ॥पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम्॥

तत्पुरुषाय विदाहे महादेवायं धीमहि। तन्नौ रुद्रः प्रचोद्यांत्॥

संवर्ताग्नि-तिटत्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणम् गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्। अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकम् वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनिमतं पूर्वं मुखं शूलिनः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणम् कर्णोद्धासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्धिन्नदंष्ट्राङ्करम्। सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरम् वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चाथर्वनादोदयम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ प्रालेयाचलिमन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभम् भरमाभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् । विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणार्चितपदं ऋग्वेदनादोदयम् वन्देऽहं सकलं कलङ्करिहतं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥ ॐ नमो भगवतं रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST)

वामदेवाय नमौ ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमौ रुद्राय नमः कालीय नमः कलेविकरणाय नमो बलेविकरणाय नमो बलीय नमो बलेप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमौ मुनोन्मनाय नमेः॥

गौरं कुङ्कमपङ्कितं सुतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलम् भ्रूविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्। स्निग्धं विम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतम् वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वक्रं हरस्योत्तरम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मं शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

व्यक्ताव्यक्तनिरूपितं च परमं षिद्वश्वातत्त्वाधिकम् तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरिमिति ध्येयं सदा योगिभिः। ओङ्कारादि समस्तमन्त्रजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम् वन्दे पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

## ॥ केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः॥

या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ शिखायै नमः॥ (TUFT)

अस्मिन् मंहृत्यंर्णवैंऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषा रे सहस्रयोजनेऽवधन्वंनि तन्मसि॥ शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD)

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषार्थं सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD)

ह्रसः श्रुचिषद्वसुरन्तिरिक्षसद्घोतां वेदिषदितिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वर्स्तरत्त्रसद्योमसद्बा गोजा ऋतजा अद्विजा ऋतं बृहत्॥ भ्रुवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS)

त्र्यम्बकं यजामहे सुग्नियं पुष्टिवधीनम्। उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES)

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सर्स्याय च नमौ नाद्यायं च वैश्वन्तायं च। कर्णाभ्यां नमः॥ (EARS)

मार्नस्तोके तर्नये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नौ रुद्र भामितोऽवधीर्हिवष्मन्तो नर्मसा विधेम ते॥ नासिकायै नमः॥ (NOSE)

अवतत्य धनुस्त्वः सहस्राक्ष शतेषुधे॥

निशीर्यं शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव।

मुखाय नमः॥ (FACE)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षमाचराः।

तेषा 🖁 सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥

कण्ठाय नमः॥ (NECK)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ं रुद्रा उपश्रिताः।

तेषा ै सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK)

नर्मस्ते अस्त्वायुधायानातताय धृष्णवै।

उभाभ्यामुत ते नमौ बाहुभ्यां तव धन्वने॥

बाहुभ्यां नमः॥ (SHOULDERS)

या ते हेतिमी दृष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।

तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिञ्जुज॥

उपबाहुभ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST)

परिणो रुद्रस्यं हेतिवृणकु परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः।

अवं स्थिरा मुघवं स्यस्तनुष्व मीर्बस्तोकाय तनयाय मृडय॥

मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS)

ये तीर्थानि प्रचरेन्ति सुकावन्तो निषक्षिणः।

तेषार्ं सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS)

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS)

वामदेवाय नमौ ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालीय नमः कलिवकरणाय नमो बलिवकरणाय नमो बलिप्रमथनाय नमः सर्वीभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमेः॥
तर्जनीभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS)

अघोरॅभ्योऽथ घोरॅभ्यो घोर्घोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्धरूपेभ्यः॥ मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS)

तत्पुरुषाय विद्महै महादेवायं धीमहि। तन्नौ रुद्रः प्रचोदयौत्॥ अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS)

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये-ऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ (RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT AND

नमों वः किरिकेभ्यों देवाना हर्दयेभ्यः॥

हृद्याय नमः॥ (HEART)

नमौ गणेभ्यौ गणपंतिभ्यश्च वो नर्मः॥

पृष्ठाय नमः॥ (BACK)

नमुस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नर्मः॥

कक्षाभ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो हिर्णयबाहवे सेनान्ये दिशां च पत्ये नमः॥

पार्श्वाभ्यां नमः॥ (TRUNK)

विज्यं धर्नुः कपर्दिनो विश्वल्यो बार्णवाश उत।

अनेरान्नस्येषेव आभुरस्य निष्क्षिथः॥

जठराय नमः॥ (STOMACH)

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पतिरेकं आसीत्।

सद्पियार पृथिवीं द्यामुतेमां करमै देवायं हविषा विधेम॥

नाभ्ये नमः॥ (NAVEL)

मीढुंष्टम् शिवंतम शिवो नः सुमना भव।

पुरमे वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान् आचर् पिनांकुं बिभ्रदागिहि॥

कट्ये नमः॥ (WAIST)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।

तेषा 🖁 सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

गृह्याय नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS)

ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्।

तेषा 🖞 सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

अण्डाभ्यां नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS)

स शिरा जातवेदा अक्षरं परमं पुदम्। वेदाना<u> १</u> शिरसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥

अपानाय नमः॥ (ANUS)

मा नौ महान्त्रमुत मा नौ अर्भुकं मा न उक्षेन्त्रमुत मा ने उक्षितम्। मा नौऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नेस्तुनुवौ रुद्र रीरिषः॥ ऊरुभ्यां नमः॥ (THIGHS)

एष ते रुद्रभागस्तं जुषस्व तेनावसेन परो मूर्जवतोऽती् ह्यवंततधन्वा पिनाकहस्तः कृत्तिवासाः॥

जानुभ्यां नमः॥ (KNEES)

स्र सृष्टिजिथ्सोम्पा बहिश्चध्यूर्ध्वधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता। बृह्यस्पते परिदीया रथेन रक्षोहाऽमित्राई अपबार्धमानः॥ जङ्घाभ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES)

विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बंहुधा जातं जायमानं च यत्। सर्वो होष रुद्रस्तस्मे रुद्राय नमो अस्तु॥ गुल्फाभ्यां नमः॥ (ANKLES)

ये पथां पंथिरक्षय ऐलबृदा युव्युर्धः। तेषार्थं सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ पादाभ्यां नमः॥ (FEET)

अध्यवोचद्धिवक्ता प्रथमो दैव्यौ भिषक्।

## अही 🖢 श्र्य सर्वां ञ्चम्भयन्त्सर्वांश्य यातुधान्यंः॥

कवचाय हुम्॥ (CROSS HANDS ACROSS CHEST WITH TIPS OF FINGERS TOUCHING

SHOULDERS)

नमों बिल्मिने च कव्चिने च नमः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥

उपकवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)

नमौ अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषै।

अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नर्मः॥

नेत्रत्रयाय वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERSACROSS THE THREE

EYES)

प्र मुं<u>ञ्च</u> धन्वं<u>न</u>स्त्वमुभयो्रार्त्नियोुर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥

अस्त्राय फट् ॥ (SLAP INDEXAND MIDDLE FINGERS OF RIGHT HAND ON LEFT PALM)

य पुतार्वन्तश्च भूयार्ससश्च दिशौ रुद्रा वितस्थिरे। तेषार्स सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

इति दिग्बन्धः॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS AROUND SELF)



# ॥ मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः॥

ॐ मूर्घे नमः। नं नासिकाय नमः। मों ललाटाय नमः। भं मुखाय नमः। गं कण्ठाय नमः। वं हृदयाय नमः। तें दक्षिणहस्ताय नमः। रुं वामहस्ताय नमः। द्रां नाभ्ये नमः। यं पादाभ्यां नमः।

# ॥ पादादिमूर्घान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः॥

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ पादाभ्यां नमः॥

वामदेवाय नमौ ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥ ऊरुभ्यां नमः॥

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वैभ्यः सर्वशर्वैभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ हृद्याय नमः॥

तत्पुर्रुषाय विदाहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयात्॥ मुखाय नमः॥

ईशानः सर्वेविद्यानामीश्वरः सर्वेभूतानां ब्रह्माधिपितुर्ब्रह्मणो-ऽधिपितुर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ हंस हंस मूर्ध्ने नमः॥



### ॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्त्रस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः। अव्यक्त गायत्री छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्। हंसीं शक्तिः। हंसूं कीलकम्॥

परमहंस-प्रसाद-सिद्धर्थे जपे विनियोगः॥

हंसां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसूं मध्यमाभ्यां नमः। हंसीं अनामिकाभ्यां नमः। हंसीं किनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसां करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हंसां हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखाये वषट्। हंसीं कवचाय हुम्। हंसीं नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसाः अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोम् इति दिग्बन्धः॥ ॥ध्यानम॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्। पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥

> हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥ हंस हंसायं विदाहें परमहंसायं धीमहि। तन्नों हंसः प्रचोदयात्॥

(एवं त्रिः)

हंस हंसेति यो ब्र्याद्धंसो नाम सदाशिवः। एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥

## ॥दिक् सम्पुटन्यासः॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्। [ॐ] लं। त्रातार्मिन्द्रमिवतार्मिन्द्र्र हवेहवे सुहव्र श्रूमिन्द्रम्। हुवे नु शकं पुरुहूतमिन्द्रई स्वस्ति नौ मघवा घात्विन्द्रेः॥ \_ लं भूर्भुवः सुर्वः। इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतय ऐरावतवाहनाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [इन्द्रः संरक्षतु॥] 11 8 11 ॐ भूर्भुवः सुवरोम्। [नं] रं। त्वन्नौ अग्ने वर्रुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवं यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वहितमः शोशुंचानो विश्वा द्वेषा शेस प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥ रं भूर्भुवः सुर्वः। अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतयेऽजवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अग्नये नमः। अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [अग्निः संरक्षतु॥] 11211 ॐ भूर्भुवः सुवरोम्। [मों] हं। सुगं नः पन्थामभयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षेत्रे यम एति राजाँ। यस्मिन्नेनमभ्यिषेश्चन्त देवाः। तद्स्य चित्रश ह्विषां यजाम॥ हं भूभुंवः सुर्वः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय

साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय

उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [यमः संरक्षतु॥]॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[मं] षं। असुन्वन्तमयंजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यां तस्कर्स्यान्वेषि। अन्यमस्मिद्दंच्छ सा तं इत्या नमों देवि निर्ऋते तुभ्यंमस्तु॥ षं भूभुंवः सुवंः। निर्ऋतये खङ्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [निर्ऋतिः संरक्षतु॥]॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[गं] वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दमानुस्तदा शास्ते यजमानो हविभिः।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशस्स मा न आयुः प्रमोषीः॥

वं भूर्भुवः सुर्वः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वरुणः संरक्षतु॥]॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[वं] यं। आ नौ नियुद्धिः श्वातिनीभिरध्वरम्। सहस्रिणीभिरुपयाहि

यज्ञम्।

वायौ अस्मिन् ह्विषि मादयस्व। यूयं प्रांत स्वस्तिभिः सद्गं नः॥ यं भूर्भुवः सुर्वः। वायवे साङ्कराध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सर्शाक्तेपरिवाराय सर्वालङ्कार-भूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने यं वायवे नमः। वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥]॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[तें] सं। वयः सौम व्रते तर्व। मनस्तुनुषु बिभ्रतः।

प्रजावंन्तो अशीमहि॥

सं भूर्भुवः सुर्वः। सोमाय अमृतकलशहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कार-भूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

उत्तरदिग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय नमः। सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [सोमः संरक्षतु॥]॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[रुं] शं। (ऋक्) तमीशाँनुं जर्गतस्तुस्थुष्टस्पतिम्। धियुं जिन्वमवसे ह्रमहे वयम्।

पूषा नो यथा वेदंसामसंदृधे रक्षिता पायुरदंब्यः स्वस्तयै॥

शं भूर्भुवः सुवंः। ईशानाय त्रिशूलहस्ताय भूताधिपतये वृषभवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कार-भूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। ईशानिदग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय नमः। ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ईशानः संरक्षतु॥]॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[द्रां] खं। (ऋक्) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भर्रहृतौ सजोषाः।

यः शंस्ति स्तुवते धायि पुज्र इन्द्रंज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः॥ खं भूर्भुवः सुवंः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये हंसवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ऊर्ध्वदिग्भागे मूर्धिस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ब्रह्मा संरक्षतु॥]॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[यं] हीं। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी।

यच्छानः शर्मे सप्रथाः॥

हीं भूर्भुवः सुर्वः। विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने हीं विष्णवे नमः। विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [विष्णुः संरक्षतु॥]॥१०॥

## ॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्॥

ॐ भूर्भुवरसुवं:।ॐ अं। नर्मः शम्भवें च मयोभवें च नर्मः शङ्कराये च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ विभूरसि प्रवाहणो रौद्रेणानीकेन पाहि माँ उम्ने पिपृहि मा मां हिश्सीः॥ अं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। शिखास्थाने रुद्राय नमः॥१॥ ॐ भूर्भुवरसुर्वः।ॐ आं। नर्मः शम्भवे च मयोभवे च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ विहरिस हव्यवाहनों रौद्रेणानीकेन पाहि माँ उसे पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ आं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। शिरस्थाने रुद्राय नमः॥२॥ ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ इं। नर्मः शम्भवे च मयोभवे च नर्मः शङ्कराये च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ श्वात्रोंऽसि प्रचेता रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मा हिश्सीः॥ इं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। मूर्घ्विस्थाने रुद्राय नमः॥३॥ ॐ भूर्भुवरसुर्वः।ॐ ई। नर्मः शम्भवे च मयोभवे च नर्मः शङ्कराये च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ तुथौऽसि विश्ववैदा रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽम्ने पिपृहि मा मा \_ हिश्सीः॥ ईं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। ललाटस्थाने रुद्राय नमः॥४॥ ॐ भूर्भुवरसुवं:।ॐ उं। नर्मः शम्भवे च मयोभवे च नर्मः शङ्कराये च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ उिशागिस कवी रौद्रेणानीकेन पाहि माँ ऽम्ने पिपृहि मा मा

मा हिश्सीः॥ उं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। नेत्रयोः स्थाने रुद्राय नमः॥५॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ऊं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥ अङ्घारिरित बम्भारी रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ ऊं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं: । ॐ ऋं। नमं: शम्भवे च मयोभवे च नमं: शङ्करायं च मयस्करायं च नमं: शिवायं च शिवतंराय च॥
अवस्युरंसि दुवंस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सी: ॥ ऋं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। मुखस्थाने रुद्राय नमः॥७॥
ॐ भूर्भुवस्सुवं: । ॐ ऋं। नमं: शम्भवे च मयोभवे च नमं: शङ्करायं च मयस्करायं च नमं: शिवायं च शिवतंराय च॥
शुन्ध्यूरंसि मार्जालीयो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सी: ॥ ऋं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कण्ठस्थाने रुद्राय नमः॥८॥
ॐ भूर्भुवस्सुवं: । ॐ छं। नमं: शम्भवे च मयोभवे च नमं: शङ्करायं च मयस्करायं च नमं: शिवायं च शिवतंराय च॥
सम्राडंसि कृशान् रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सी: ॥ छं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥९॥
सम्राडंसि कृशान् रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सी: ॥ छं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥९॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ॡं। नर्मः शम्भवें च मयोभवें च नर्मः शङ्कराये

च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतराय च॥
परिषद्यौऽसि पर्वमानो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां
हिश्सीः॥ ॡं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। हृदयस्थाने रुद्राय नमः॥१०॥
ॐ भूर्भुवस्सुवंः।ॐ एं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्करायं
च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतराय च॥
प्रतक्षाऽसि नभस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां
हिश्सीः॥ एं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय नमः॥११॥
ॐ भूर्भुवस्सुवंः।ॐ ऐं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्करायं
च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतराय च॥
असंम्मृष्टोऽसि ह्व्यसूद्रो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा
मा मां हिश्सीः॥ ऐं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कटिस्थाने रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ॐ। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ ऋतधामाऽसि सुवंज्योंती रौद्रेणानीकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ ॐ ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। ऊरुस्थाने रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ औं। नर्मः शम्भवे च मयोभवे च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतंराय च॥ ब्रह्मज्योतिरित्त सुवधामा रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ औं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। जानुस्थाने रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं: । ॐ अं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥ अजौऽस्येकपाद्रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सी:॥ अं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। जङ्घास्थाने रुद्राय नमः॥१५॥ ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ अः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥ अहिरसि बुध्नियो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ अः ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। पादयोः स्थाने रुद्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो भवति। ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शाकिनी-डाकिनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद्यपद्रवाद्यपघाताः। सर्वे ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु। यजमानं रक्षन्तु। सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु॥



## ॥ गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः॥

मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं युज्ञश् सिम्ममं देधातु। या इष्टा उषसौ निम्नुचेश्च ताः सन्देधामि ह्विषौ घृतेने॥गुह्याय नमः॥१॥ अबौध्यप्तिः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवाऽऽयतीमुषासम्। यह्या ईव प्रवयामुजिहानाः प्रभानवेः सिस्रते नाकमच्छी॥ नाभ्यै नमः॥२॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः क्कुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाश्रेताश्रेसि जिन्वति॥ हृदयाय नमः॥३॥ मूर्धानं दिवो अर्तिं पृथिव्या वैश्वानरमृतायं जातम्ग्निम्। कृविश्र सम्राजमितिथां जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ कण्ठाय नमः॥४॥

ममाणि ते वर्मीभेश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवंस्ताम्। उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जर्यन्तं त्वामनुं मदन्तु देवाः॥ मुखाय नमः॥५॥

जातवेदा यदि वा पावकोऽसि। वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसि। शं प्रजाभ्यो यर्जमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं दर्दद्भ्याववृत्स्व॥ शिरसे नमः॥६॥



#### ॥ आत्मरक्षा॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्रह्मौत्मुन्वद्सृजत। तद्कामयत। समात्मनां पद्येयेति। आत्मुन्नात्मुन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै दशुमश हृतः प्रत्येशृणोत्। स दश्हृतोऽभवत्। दश्हृतो हु वै नामैषः। तं वा पतं दश्हृतश्सन्तम्। दशहोतेत्याचेक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षेप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै सप्तमः हृतः प्रत्यंशृणोत्। स सप्तर्हतोऽभवत्। सप्तर्हतो ह वै नामैषः। तं वा एतश सप्तर्हतश सन्तम्। सप्तहोतेत्याचेक्षते परोक्षेण। परोक्षेप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै षुष्ठश हृतः प्रत्येश्रणोत्। स षड्ढंतोऽभवत्। षड्ढंतो ह वै नामेषः। तं वा एतः षड्ढंतः सन्तम्। षह्वोतेत्याचंक्षते परोक्षेण। परोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामेन्त्रयत। तस्मै पञ्चमश हूतः प्रत्यंशृणोत्। स पर्श्चहृतोऽभवत्। पर्श्चहृतो ह वै नामैषः। तं वा एतं पर्श्चहृतश सन्तम्। पर्ञ्चहोतेत्याचेक्षते परोक्षेण। परोक्षेप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै चतुर्थश् हृतः प्रत्येशृणोत्। स चतुर्ह्रतोऽभवत्। चतुर्ह्रतो ह वै नामैषः। तं वा एतं चतुर्ह्रतः सन्तम्। चतुर्होतेत्याचेक्षते परोक्षेण। परोक्षेप्रिया इव हि देवाः॥ तमंब्रवीत्। त्वं वै मे नेदिष्ठश् हूतः प्रत्यंश्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार इति। तस्मान्नु हैनाङ्श्रतुर्होतार् इत्याचेक्षते। तस्माँच्छुश्रृषुः पुत्राणा हस्यतमः। नेदिष्ठो हस्यतमः। नेदिष्ठो ब्रह्मणो भवति। य एवं वेद्। आत्मने नमः॥

#### ॥ शिवसङ्कल्पः ॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्त्रायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसिङ्कल्पमस्तु॥१॥

येन कर्माणि प्रचरेन्ति धीरा यतौ वाचा मनेसा चारु यन्ति। यत्सिम्मितमनुसंयन्ति प्राणिनस्तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥२॥ येन कमीण्यपसौ मनीषिणौ यज्ञे कृण्वन्ति विद्थेषु धीराः। यदंपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३॥ यत्प्रज्ञानेमुत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तरमृतं प्रजास्। यस्मान्न ऋते किं च न कर्म कियते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पर्मस्तु॥४॥ सुषार्थिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीश्विभिर्वाजिन इव। हत्प्रतिष्ठं यदिजिरं जिवेष्ठं तन्मे मर्नः शिवसिङ्कल्पमस्तु॥५॥ यस्मिनृचः साम् यजू १षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मि श्रेश्चित्तर सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मर्नः शिवसिङ्कल्पमस्तु॥६॥ यदत्रं षष्ठं त्रिशत स्वीरं यज्ञस्यं गुह्यं नवनावमाय्यम्। द्शं पञ्च त्रिश्शतं यत्परं च तन्मे मर्नेः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥७॥ यज्ञार्यतो दूरमुदैति दैवं तदं सप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥८॥ येनेदं विश्वं जर्गतो बभूव ये देवापि महतो जातवेदाः। तदेवाग्निस्तर्मसो ज्योतिरेकं तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥९॥ येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशश्च। येनेदं जगुद्याप्तं प्रजानां तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥१०॥ ये मेनो हृद्यं ये चे देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यर्शिमः। ते श्रोत्रे चक्षुषी सञ्चर्नतं तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पमस्तु॥११॥

अचिन्त्यं चाप्रमेयं च व्यक्ताव्यक्तपरं च यत्। सूक्ष्मीत्सूक्ष्मतरं ज्ञेयं तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१२॥

एको च दुश शतं चे सहस्रं चायुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्त्रश्च परार्धश्च तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥१३॥

ये पश्च पश्चाद्श शतः सहस्रमयुतं न्यर्बुदं च। ते अग्निचित्येष्टकास्तः शरीरं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१४॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। यस्य योनिं परिपञ्चन्ति धीरास्तन्मे मनेः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१५॥

यस्येदं धीराः पुनन्ति कवयौ ब्रह्माणमेतं त्वा वृणत इन्दुम्। स्थावरं जङ्गमं द्यौराकाशं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१६॥

परात्परतरं <u>चैव</u> यत्पराचैव यत्परम्। यत्परात्परतो ज्ञेयं तन्मे मनः श्विवसंङ्कत्पर्मस्तु॥१७॥

परात्परतरो <u>ब्रह्मा</u> तत्परात्परतो हरिः। तत्परात्परतोऽधीशस्तन्मे मनेः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥१८॥

या वेदादिषुं गायत्री सर्वव्यापी महेश्वरी। ऋग्यजुः सामाथर्वेश्च तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥१९॥

यो वै देवं महादेवं प्रणवं पर्मेश्वरम्। यः सर्वे सर्ववेदेश्च तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२०॥ प्रयंतः प्रणेवो<u>ङ्कारं</u> प्रणवं पुरुषोत्तमम्। ओङ्कारं प्रणेवात्मानं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२१॥

योऽसौ सर्वेषुं वेदेषु पठ्यतै ह्यज इश्वरः। अकायौ निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२२॥

गोमिर्जुष्टं धर्नेन ह्यायुंषा च बलेन च। प्रजयो पुशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२३॥

कैलांसिशिखरे रम्ये शङ्करस्य शिवालये। देवतास्तत्रं मोदन्ते तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥२४॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्तन्मे मनः श्विवसंङ्कल्पमस्तु॥२५॥

विश्वतंश्रक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोहस्त उत विश्वतंस्पात्। सम्बाहुभ्यां नर्माते सम्पतंत्रैर्द्यावापृथिवी जनयन्देव एकस्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२६॥

चतुरौ वेदानधीयीत सर्वशास्त्रमयं विदुः। इतिहासपुराणानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२७॥ मा नौ महान्तमुत मा नौ अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नौऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तुनवौ रुद्र रीरिष्टस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२८॥ मानस्तोके तनेये मा न आयुष्टि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नौ रुद्र भामितोऽवधीर्ह्विष्मन्तो नर्मसा विधेम ते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२९॥

> ऋतः सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमुस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३०॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुर्ष्टमाय तर्व्यसे। वो चेम शन्तम हृदे। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनेः शिवसिङ्कल्पमस्तु॥३१॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचौ वेन आवः। सबुध्नियो उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमस्तश्च विवस्तन्मे मनः शिवसिङ्कल्पमस्तु॥३२॥

यः प्राणितो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूवं। य ईशे अस्य द्विपद्श्वतुष्पदः कस्मै देवायं हविषां विधेम तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३३॥

य आत्मदा बेलदा यस्य विश्वं उपासंते प्रशिष्ं यस्यं देवाः। यस्यं छायाऽमृतं यस्यं मृत्युः कस्मै देवायं हविषां विधेम् तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेशा तस्मै रुद्राय नमों अस्तु तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३५॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीर्रं सर्वभूतानां

तामिहोपेह्वये श्रियं तन्मे मनेः शिवसङ्कत्यमस्तु॥३६॥ य इदश शिवसङ्कल्पश् सदा ध्यायन्ति ब्राह्मणाः। ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनेः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ हृदयाय नमः॥



#### ॥ पुरुषसूक्तम्॥

ॐ सहस्र्रशीर्षा पुर्रुषः। सहस्राक्षः सहस्र्रपात्। स भूमिं विश्वतौ वृत्वा। अत्यतिष्ठदृशाङ्गुलम्॥ पुर्रुष एवेद् सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृत्तत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहिति॥ एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायार्थ्श्य पूर्रुषः।

पादौऽस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुर्रुषः। पादौऽस्येहाऽऽभवात्पुर्नः। ततो विश्वङ्क्षंकामत्। सा<u>ञ्चानानञ्च</u>ने अभि॥ तस्माद्विरार्डजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पृश्चाद्भिमथौ पुरः॥

यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतेन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ सप्तास्यऽऽसन्परिधर्यः। त्रिः सप्त समिधेः कृताः। देवा यद्यज्ञं तेन्वानाः। अबिधन्पुरुषं पशुम्॥ तं यज्ञं बर्हिषि ग्रीक्षन्। पुरुषं जातमेग्रतः।

तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥ तस्माँ यज्ञात्सर्वेहुतः। सम्भृतं पृषद्गुज्यम्। पुशूश्स्ताश्रश्चेके वायुव्यान्। आरुण्यान्याम्याश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञात्सर्वेहृतः। ऋचः सामानि जिज्ञरे। छन्दार्श्स जिज्ञरे तस्मौत्।

यजुस्तस्मदिजायत॥ तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादेतः। गावों ह जिज्ञरे तस्मात्। तस्माजाता अजावयः॥ यत्पुरुषं व्यद्धः। कृतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किर्मस्य कौ बाहू। कावूरू पाद्विच्येते॥ ब्राह्मणौऽस्य मुखमासीत्। बाह्र राजन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः। पुन्नाः शूद्रो अंजायत॥ चुन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाप्तिश्ची प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीद्नतरिक्षम्। शीष्णां द्यौः समेवर्तत। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकां अकल्पयन्॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्तै॥ धाता पुरस्ताद्यमुदाजहारं। शुकः प्रविद्वान्प्रदिशुश्चतंस्रः। तमेवं विद्वानुमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥ यज्ञेनं युज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ शिरसे स्वाहा॥

#### \*\*

#### ॥ उत्तरनारायणम्॥

अन्यः सम्मूतः पृथिव्ये रसाच। विश्वकर्मणः समवर्तताधि। तस्य त्वष्टां विद्धंदूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानुमग्रे॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवेर्णं तमेसः परेस्तात्। तमेवं विद्वानुमृतं इह भेवति। नान्यः पन्थां विद्यतेयंऽनाय॥ प्रजापंतिश्चरित गर्भे अन्तः। अजायमानो बहुधा विजायते।

तस्य धीराः परिजानिन्ति योनिम्। मरीचीनां पदिमिच्छन्ति वेधसः॥ यो देवेभ्य आतंपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं ब्राह्मं जनयंन्तः। देवा अग्रे तदंब्रवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्य देवा असन् वशे॥ हीश्चं ते लक्ष्मीश्च पल्यौ। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षंत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मनिषाण। अमुं मनिषाण। सर्वं मनिषाण॥

शिखाये वषट्॥



#### ॥ अप्रतिरथम्॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - ४/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - ४)

आ्राः शिशांनो वृष्मो न युध्मो घंनाघनः क्षोभंणश्चर्षणीनाम्। सङ्कन्दंनोऽनिमिष एंकवीरः श्वतः सेनां अजयत् साकमिन्द्रः। सङ्कन्दंनेनानिमिषेणं जिष्णुनां युत्कारेणं दुश्चवनेनं घृष्णुनां। तदिन्द्रेण जयत् तत्संहध्वं युधो नर् इषुंहस्तेन वृष्णां। स इषुंहस्तैः सनिष्किभिर्वशी सङ्स्रष्टा स युध इन्द्रो गुणेनं। सुरसृष्टजिथ्सोमपा बांहुशुध्वधन्वा प्रतिहिताभिरस्तां।

बृहंस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्रार्थं अपुबार्धमानः। प्रभुञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयंत्रस्माकंमेध्यविता रथानाम्। गोत्रिभदं गोविदं वर्ज्रबाहुं जर्यन्तमज्मं प्रमृणन्तमोजसा। इमश् संजाता अनु वीरयध्विमन्द्रश्रे सखायोऽनु सश् रंभध्वम्। बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः। अभिवीरो अभिसंत्त्वा सहोजा जैत्रीमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्। अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदायो वीरः शतमन्युरिन्द्रः।

दुश्चवनः पृंतनाषाडंयुध्यौऽस्माक् से सेना अवतु प्र युत्सु। इन्द्रं आसां नेता बृह्स्पतिर्दक्षिणा युज्ञः पुर एंतु सोमः। देवसेनानांमभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतौ युन्त्वग्रौ। इन्द्रंस्य वृष्णो वर्रुणस्य राज्ञं आदित्यानौ मरुता शर्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदंस्थात्। अस्माकृमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानं देवा अवता हवेषु। उर्द्वर्षय मघवन्नायुधान्युत् सत्त्वनां मामकानां महाश्रीतः। उद्वृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतामेतु घोषः। उप प्रेत जयता नरः स्थिरा वः सन्तु बाहवः। इन्द्रौ वः शर्म यच्छत्त्वनाधृष्या यथाऽस्थ। अवसृष्टा पर्रा पत शर्रव्ये ब्रह्मसश्रीता।

गच्छामित्रान् प्रविश् मेषां कं चनोच्छिषः। मर्माणि ते वर्मीभश्छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जर्यन्तं त्वामनुं मदन्तु देवाः। यत्रं बाणाः सम्पतिन्त कुमारा विशिखा ईव। इन्द्रौ नुस्तत्रं वृत्रहा विश्वाहा शर्मं यच्छतु॥ कवचाय हुम्॥

# ॥ प्रतिपूरुषम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ८/अनुवाकः - ६)

प्रतिप्रुषमेकंकपालान्निर्वपत्येक्मितिरिक्तं यावेन्तो गृह्याः समस्तेभ्यः कर्मकरं पश्नाः शर्मासि शर्म यर्जमानस्य शर्म मे यच्छैकं एव रुद्रो न द्वितीयाय तस्थ आखुस्ते रुद्र पशुस्तं जुषस्वैष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकया तं जुषस्व भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजमथो अस्मभ्यं भेषजः सुभेषजं यथाऽसित। सुगं मेषाय मेष्या अवाम्ब रुद्रमिद्मह्मव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नः श्रेयसः कर्द्यथा नो वस्यसः कर्द्यथा नः पशुमतः कर्द्यथा नो व्यवसाययात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पृष्टिवधनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योमुक्षीय माऽमृतात्॥ एष ते रुद्रभागस्तं जुषस्व तेनावसेन परो मूर्जवतोऽतीह्यवंततधन्वा पिनाकहस्तः कृत्तिवासाः॥

## ॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०) ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपिति। जाता एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकमितिरिक्तम्। जिन्ष्यमीणा एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकंकपाला भवन्ति। एकधैव रुद्रं निरवंदयते। नाभिघारयित। यदिभिघारयैत्। अन्तरवचारिणई रुद्रं कुर्यात्। एकोल्मुकेन यन्ति। तिद्धं रुद्रस्यं भागधेयम्। इमां दिशं यन्ति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायमिव दिशि रुद्रं निरवंदयते। रुद्रो वा अपुशुकाया आहेत्यै नातिष्ठत। असौ ते पुशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टि। तमस्मै पशुं निर्दिशति। यदि न द्विष्यात्। आखुस्ते पशुरिति ब्र्यात्। न ग्राम्यान् पशून् हिनस्ति। नऽऽरण्यान्। चतुष्पथे जुंहोति। एष वा अग्नीनां पड्बीशो नाम। अग्निवत्येव जुंहोति। मध्यमेन पर्णेन जुहोति। सुग्घ्येषा। अथो खर्छ। अन्तमेनैव हौतव्यम्। अन्तत एव रुद्रं निरवंद्यते। एष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिक्येत्याह। शरद्वा अस्याम्बिका स्वसा। तया वा एष हिनस्ति। यश हिनस्ति। तयैवैन सह श्रीमयति। भेषजं गव इत्योह। यार्वन्त एव ग्राम्याः पशर्वः। तेभ्यौ भेषजं करोति। अवाम्ब रुद्रमदिमहीत्याह। माऽमृतादिति वावैतद्वि। उत्किरन्ति। भगस्य लीप्सन्ते। मूते कृत्वाऽऽसंजन्ति। यथा जनं यतेऽवसं करोति। ताहगेव तत्। एष ते रुद्र भाग इत्योह निरवत्यै। अप्रतीक्षमायन्ति। अपः परिषिञ्चति। रुद्रस्यान्तर्हित्यै। प्रवा एतेंस्माल्लोकाच्यवन्ते। ये त्र्यम्बकैश्चरन्ति। प्रतितिष्ठन्ति।

नेत्रत्रयाय वौषट्॥



# ॥ शतरुद्रीयम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः – १/प्रश्नः – ३/अनुवाकः – १४)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्व शर्धो मारुतं पृक्ष ईिशिषे। त्वं वातैररुणैर्यांसि शङ्मयस्त्वं पूषा विधतः पासि न तमना। आ वो राजानमध्वरस्यं रुद्र होतार सत्ययज् रोदंस्योः। अग्निं पुरा तनियत्नोर्चित्ताद्धिरणयरूपमवसे कृणुध्वम्। अग्निर्होता नि षसादा यजीयानुपस्थे मातुः सुरुभावं लोके। युवां कृविः पुरुनिष्ठ ऋतावां धृर्तां कृष्टीनामृत मध्यं इद्धः।

साध्वीमकर्देववीतिं नो अद्य युज्ञस्यं जिह्वामंविदाम् गुह्याम्। स आयुराऽगात्सुर्भिवसानो भद्रामकर्देवहृतिं नो अद्य। अक्रन्दद्गिः स्तनयन्तिव द्योः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समुञ्जन्न। सद्यो जंज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदंसी भानुनां भात्यन्तः। त्वे वसूनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे युज्ञियांसः।

क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन्त्सः सौभंगानि दिधरे पविके। तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथंक्। अग्ने कामाय येमिरे। अश्याम् तं काममग्ने तवोत्यंश्यामं रियः रियवः सुवीरम्। अश्याम् वार्जम्भि वार्जयन्तोऽश्यामं सुम्नमंजराऽजरेन्ते। श्रेष्ठं यविष्ठ भारताऽग्ने सुमन्तमा भर।

वसौ पुरुस्गृह र्रं रियम्। स श्वितानस्तन्यत् रौचनस्था अजरेभिर्नानदिद्धिर्यविष्ठः। यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यित्ररंनुयाति भर्वन्नं। आयुष्टे विश्वतौ द्व्ययम्प्तिर्वर्णयः। पुनस्ते प्राण आयिति परा यक्ष्मर्रं सुवामि ते। आयुर्दा अग्ने ह्विषौ जुषाणो घृतप्रतीको घृतयौनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गर्व्यं पितेव

#### पुत्रमुभिरंक्षतादिमम्।

तस्मै ते प्रतिहर्यते जातंवदो विचर्षणे। असे जनांमि सुष्टुतिम्। दिवस्परि प्रथमं जंज्ञे अग्निरस्मिद्वितीयं परि जातवेदाः। तृतीयंमप्सु नृमणा अजंस्रमिन्धांन एनं जरते स्वाधीः। शुचिः पावक् वन्द्योऽसे बृहद्विरोचसे। त्वं घृतेभिराहृतः। ह्यानो रुका उर्व्या व्यंद्यौदुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निर्मृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः।

आ यदिषे नृपतिं तेज आनु हुचि रेतो निषिक्तं द्यौर्भीकैं। अग्निः शर्धमनवद्यं युवनिङ् स्वाधियं जनयत्सूदयंच। स तेजीयसा मनसा त्वोतं उत शिक्ष स्वपत्यस्यं शिक्षोः। अग्ने रायो नृतंमस्य प्रभूतौ भूयामं ते सुष्टुतयंश्च वस्वः। अग्ने सहन्तमा भर द्युम्नस्यं प्रासहां रियम्।

विश्वा यश्चर्षणीर्भ्यासा वाजेषु सासहेत्। तमेग्ने पृतना सह र्र्रेरियः संहस्व आ भेर। त्वः हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजेस्य गोमेतः। उक्षान्नाय व्यान्नाय सोमेपृष्ठाय वेधसै। स्तोमैर्विधेमाग्नयै। वद्मा हि सूनो अस्यदासद्वां चक्रे अग्निर्जनुषाऽज्माऽन्नम्। स त्वं नं ऊर्जसन् ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः।

अग्न आयू श्रेषि पवस् आ सुवोर्जिमिषं च नः। आरे बांधस्व दुच्छुनाम्। अग्ने पर्वस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। द्घत्पोषश्रं रुयिं मिये। अग्ने पावक रोचिषां मन्द्रयां देव जिह्नया। आ देवान् विक्षि यिक्षं च। स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाश इहऽऽवह। उप युज्ञश् ह्विश्चं नः। अग्निः शुचिं व्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः। शुचीं रोचत् आहुंतः। उद्ग्ने शुचंयस्तवं शुक्रा भ्राजन्त ईरते। तव ज्योतीर्इष्युर्चयः॥

## ॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः। त्वश रार्धो मारुतं पृक्ष ईिराषे। त्वं वातैररुणैर्यांसि शङ्गयः। त्वं पूषा विधतः पासि नु त्मना। देवां देवेषुं श्रयध्वम्। प्रथमा द्वितीयेषु श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषुं श्रयध्वम्। चुतुर्थाः पशच्चमेषुं श्रयध्वम्। पुञ्चमाः षुष्ठेषुं श्रयध्वम्॥ षुष्ठाः सप्तमेषुं श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषु श्रयध्वम्। अष्टमा नवमेषु श्रयध्वम्। नवमा देशमेषु श्रयध्वम्। दशमा एकादशेषुं श्रयध्वम्। एकादशा द्वादशेषुं श्रयध्वम्। द्वादशास्त्रयोदशेषु श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चेतुर्दशेषु श्रयध्वम्। चतुर्दशाः पेञ्चदशेषु श्रयध्वम्। पञ्चदशाः षोंडशेषु श्रयध्वम्॥ षोडशाः सप्तदशेषुं श्रयध्वम्। सप्तदशा अष्टादशेषुं श्रयध्वम्। अष्टादशा एकान्नविश्शेषु श्रयध्वम्। एकान्नविश्शा विर्रोषुं श्रयध्वम्। विर्शा एकविर्शेषुं श्रयध्वम्। एकविरशा द्वीविश्रोषु श्रयध्वम्। द्वाविश्रास्त्रयोविश्रोषु श्रयध्वम्। त्रयोविश्शाश्चेतुर्विश्शेषु श्रयध्वम्। चतुर्विश्शाः पश्चिविश्शेषु श्रयध्वम्। <u>पञ्चवि</u>श्वाः षं<u>ड्विश्</u>रोषुं श्रयध्वम्॥ षड्वि<u>श्</u>वाः संप्तविश्शेषुं श्रयध्वम्। सप्तविश्शा अष्टाविश्शेषुं श्रयध्वम्।

अष्टाविश्वा एकान्नित्रश्वेषु अयध्वम्। एकान्नित्रिश्वोषुं अयध्वम्। त्रिश्वा एकित्रिश्वोषुं अयध्वम्। एकित्रिश्वा द्वात्रिश्वोषुं अयध्वम्। एकित्रिश्वा द्वात्रिश्वेषुं अयध्वम्। द्वात्रिश्वास्त्रियस्त्रिश्वोषुं अयध्वम्। देवास्त्रिरेकाद्वास्त्रिस्त्रयस्त्रिश्वाः। उत्तरे भवत। उत्तरवर्त्मान् उत्तरसत्वानः। यत्काम इदं जुहोमि। तन्मे समृध्यताम्। वयश् स्याम् पर्तयो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥ अश्वाय फट्॥

#### ॥ पञ्चाङ्गम्॥

हु< सः श्रुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्घोतां वेदिषदितिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदितसद्योमसद्बा गोजा ऋतजा अद्विजा ऋतं बृहत्॥

प्रतिद्वर्णाः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवधीनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

तत्संवितुर्वृणीमहे। वयं देवस्य भोजनम्। श्रेष्ठर्ं सर्वधातमम्। तुरं भगस्य धीमहि॥

विष्णुर्योनिं कल्पयतु। त्वष्टां रूपाणि पिश्शतु। आसिश्चतु प्रजापंतिः। धाता गर्भं दधातु ते॥

#### ॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः॥

हिरण्यगर्भः समेवर्तताग्रे भूतस्य जातः पितरेकं आसीत्। सद्पिधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवायं हिवर्षा विधेम॥ [उरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥१॥

यः प्राणितो निमिषतो मिहित्वैक इद्राजा जगेतो बभूवे। य ईशे अस्य द्विपद्श्वतुष्पद्ः कस्मै देवायं हविषां विधेम॥ [शिरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥२॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रेथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचौ वेन ओवः। सबुधियो उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवेः॥१॥ [दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमिभः॥ [मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥

उपेश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुंरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं जगेत्। स दुन्दुभे सुजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अपेसेघ शत्रून्॥ [वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अग्ने नयं सुपर्था राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनािन विद्वान्। युयोध्यंस्मर्ज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमं उक्तिं विधेम॥ [पद्माम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥

या ते अग्ने रुद्रिया तुनूस्तयां नः पाहि तस्यास्ते स्वाहा॥ [कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥

इमं यंमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्त्राः कविशास्ता वेहन्त्वेना राजन् ह्विषां मादयस्व॥ [कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥

# ॥ लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम्॥

अथऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री रुद्र रूपं ध्यायेत्॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवऋकम्। गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥ नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्। व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥ कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्। ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥ वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्घधारिणम्। अमृते नाष्ट्रतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥ दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्। नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥ सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्। एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥

अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्कवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मिन देवताः स्थापयेत्॥

## ॥ लघुन्यासे देवता-स्थापनम्॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु। बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु। वक्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्वायुस्तिष्ठतु। नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्। कर्णयोरिश्वनौ तिष्ठेताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्ध्योदित्यास्तिष्ठन्तु। शिरिस महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु। पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु। पुरतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बिहः सर्वतोऽग्निज्वालामाला-परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं तिष्ठन्तु। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥]

अग्निमें वाचि श्रितः। वाग्घृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (जिह्ना)

वायुमें प्राणे श्रितः। प्राणो हृद्ये। हृद्यं मिय। अहम्मृते। अमृतं ब्रह्मणि। (नासिका)

सूर्यो मे चक्षुंषि श्रितः। चक्षुर्हदंये। हदंयं मियं। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (नेत्रे)

चन्द्रमां मे मनिस श्रितः। मनो हृद्ये। हृद्यं मिय। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (वक्षः) दिशों में श्रोत्रें श्रिताः। श्रोत्र<u>\*</u> हद्ये। हद्यं मिय। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (श्रोत्रे)

आपौ मे रेतिसि श्रिताः। रेतो हृद्ये। हृद्यं मिय। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (गुह्मम्)

पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीर् हद्ये। हद्यं मिय। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (शरीरम्)

ओषि<u>वनस्पतयौ में</u> लोमसुश्रिताः। लोमिनि हृद्ये। हृद्यं मिय। अहमुमृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (लोमानि)

इन्द्रौ मे बलै श्रितः। बल्र हद्ये। हद्यं मिय। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (बाह्र)

पुर्जन्यों मे मूर्घि श्रितः। मूर्घा हृद्ये। हृद्यं मिये। अहमुमृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (शिरः)

ईशांनो मे मन्यौ श्रितः। मन्युर्हद्ये। हृद्यं मिय। अहममृतौ। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

आत्मा में आत्मिनि श्रितः। आत्मा हृदये। हृद्यं मिये। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

पुर्नर्म आत्मा पुनरायुरागात्। पुर्नः प्राणः पुनराकूतमागात्। वैश्वानरो रिक्मिर्मिर्वावृधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥)

# ॥ कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम्॥

# ॥ षोडशोपचार पूजा॥

**\*\*\***\*\*

#### ॥श्रीरुद्रनाम त्रिशती॥

नमो हिर्रण्यबाहवे नर्मः। सेनान्ये नर्मः। दिशां च पत्ये नमः। नमौ वृक्षेभ्यो नमः। हरिकेशेभ्यो नर्मः। पुशूनां पत्ये नर्मः। नमः सस्पिञ्जराय नर्मः। त्विषीमते नर्मः। पथीनां पत्तेये नर्मः। नर्मो बभ्लुशाय नर्मः। विव्याधिने नर्मः। अन्नानां पर्तये नर्मः। नमो हरिकेशाय नर्मः। उपवीतिने नर्मः। पुष्टानां पतेये नमः। नमौ भवस्य हेत्यै नमः। आतताविने नर्मः। क्षेत्राणां पर्तये नर्मः। नर्मः सूताय नर्मः। अहन्त्याय नर्मः। वनानां पत्रये नमः। नमो रोहिताय नमः। स्थपतेये नर्मः। वृक्षाणां पतेये नर्मः। नमों मन्त्रिणे नर्मः। वाणिजाय नर्मः। कक्षाणां पत्ये नर्मः। नर्मो भुवन्तये नर्मः। वारिवस्कृताय नर्मः। ओषधीनां पर्तये नर्मः। नमं उच्चैघोषाय नमः। आकृन्दयंते नमः। पत्तीनां पत्तये नमः। नमः कृत्स्नवीताय नमः। धावते नमः। सत्त्वनां पत्तये नमः॥

नमः सहमानाय नमः। निव्याधिने नमः। आव्याधिनीनां पत्ये नर्मः। नर्मः ककुभाय नर्मः। निषङ्गिणे नर्मः। स्तेनानां पर्तये नर्मः। नमो निषङ्गिणे नमः। इषुधिमते नमः। तस्कराणां पत्रये नर्मः। नमो वर्चते नर्मः। परिवर्ञ्चते नर्मः। स्तायूनां पर्तये नर्मः। नमौ निचेरवे नर्मः। परिचराय नर्मः। अरंण्यानां पत्तेये नर्मः। नर्मः सृकाविभ्यो नर्मः। जिघा रसझो नर्मः। मुष्णतां पतेये नर्मः। नमौऽसिमञ्चो नर्मः। नक्तं चर्ग्न्यो नर्मः। प्रकृन्तानां पतेये नर्मः। नर्म उष्णीषिने नर्मः। गिरिचराय नर्मः। कुलुञ्चानां पर्तये नर्मः। नम इषुमद्भो नर्मः। धन्वाविभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमं आतन्वानेभ्यो नर्मः। प्रतिद्धानिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमं आयच्छं ऋो नमः। विसृजद्यंश्च नमः। वो नमः। नमोऽस्यद्यो नर्मः। विध्यद्मश्च नर्मः। वो नर्मः। नम् आसीनेभ्यो नर्मः। शयनिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः स्वपद्यो नमः। जाग्रद्धश्च नमः। वो नमः।

नमुस्तिष्ठं स्रो नर्मः। धार्वस्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः सभाभ्यो नर्मः। सभापितिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो अश्वैभ्यो नर्मः। अश्वपितभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः॥

नमं आव्याधिनीभ्यो नमः। विविध्यन्तीभ्यश्च नमः। वो नर्मः। नम् उर्गणाभ्यो नर्मः। तृश्हतीभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमौ गृत्सेभ्यो नर्मः। गृत्सपितिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो व्रातेभ्यो नर्मः। व्रातंपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमौ गणेभ्यो नर्मः। गणपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो विरूपेभ्यो नर्मः। विश्वरूपेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमौ महज्र्यो नर्मः। क्षुल्लकेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमौ रथिभ्यो नर्मः। अरथेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो रथैभ्यो नर्मः। रथंपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः सेनाभ्यो नमः। सेनानिभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमः क्षत्तृभ्यो नमः। सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमस्तक्षभ्यो नर्मः। रथकारेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः कुललिभ्यो नर्मः। कर्मारैभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः पुञ्जिष्टैभ्यो नमः। निषादेभ्यश्च नमः। वो नमः। नमं इषुकृज्यो नमः। धन्वकृज्यंश्च नमः। वो नमः। नमौ मृग्युभ्यो नर्मः। श्वनिभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः श्वभ्यो नर्मः। श्वपंतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः॥

नमौ भवायं च नर्मः। रुद्रायं च नर्मः। नमः शर्वायं च नमः। पुशुपत्ये च नमः। नमो नीलंग्रीवाय च नर्मः। शितिकण्ठांय च नर्मः। नमः कपर्दिने च नमः। व्युप्तकेशाय च नमः। नर्मः सहस्राक्षायं च नर्मः। शतधन्वने च नर्मः। नमों गिरिशायं च नमंः। शिपिविष्टायं च नमंः। नमौ मीदुर्षमाय च नर्मः। इषुमते च नर्मः। नमौ हस्वायं च नर्मः। वामनायं च नर्मः। नमों बृहते च नर्मः। वषीं यसे च नर्मः। नमों वृद्धार्य च नर्मः। संवृध्वेने च नर्मः। नमो अग्रियाय च नर्मः। प्रथमायं च नर्मः। नमं आशवें च नर्मः। अजिरायं च नर्मः। नमः शीघ्रियाय च नमः। शीभ्याय च नमः। नमं अम्याय च नमः। अवस्वन्याय च नमः। नर्मः स्त्रोतस्याय च नर्मः। द्वीप्याय च नर्मः॥

नमौ ज्येष्ठायं च नमः। कृतिष्ठायं च नमः। नमः पूर्वजायं च नमः। अपरजायं च नमः। नमौ मध्यमायं च नमः। अपगल्भायं च नमः। नमौ जघन्याय च नमः। बुधियाय च नमः। नमः सोभ्याय च नमः। प्रतिसर्याय च नमः। नमो याम्याय च नमः। क्षेम्याय च नमः। नमं उर्व्याय च नमः। खल्याय च नमः।
नमः श्लोक्याय च नमः। अवसान्याय च नमः।
नमो वन्याय च नमः। कश्याय च नमः।
नमः श्रवाय च नमः। प्रतिश्रवाय च नमः।
नमं आशुषेणाय च नमः। आशुरंथाय च नमः।
नमः शूराय च नमः। अविभन्दते च नमः।
नमा वर्मिणे च नमः। वर्ष्वियने च नमः।
नमो विलिमने च नमः। श्रुतसेनायं च नमः।
नमः श्रुतायं च नमः। श्रुतसेनायं च नमः।

नमों दुन्दुभ्याय च नमः। आह्नन्याय च नमः।
नमों धृष्णवें च नमः। प्रमृशायं च नमः।
नमों दूतायं च नमः। प्रहिताय च नमः।
नमों निष्किणें च नमः। इषुधिमतें च नमः।
नमस्तीक्ष्णेषवे च नमः। आयुधिनें च नमः।
नमः स्वायुधायं च नमः। सुधन्वने च नमः।
नमः सुत्याय च नमः। पथ्याय च नमः।
नमः सूद्याय च नमः। नीप्याय च नमः।
नमः सूद्याय च नमः। सरस्याय च नमः।
नमः सूद्याय च नमः। वैश्चन्तायं च नमः।
नमः कूप्याय च नमः। अवुट्याय च नमः।
नमः कूप्याय च नमः। अवुट्याय च नमः।
नमः कूप्याय च नमः।

नमों मेघ्याय च नमः। विद्युत्याय च नमः। नमं ईप्रियाय च नमः। आतप्याय च नमः। नमो वात्याय च नमः। रेष्मियाय च नमः। नमो वास्तुव्याय च नमः। वास्तुपायं च नमः॥

नमः सोमाय च नमः। रुद्रायं च नमः। नर्मस्ताम्रायं च नर्मः। अरुणायं च नर्मः। नमः शुङ्गायं च नमः। पुशुपतये च नमः। नमं उग्रायं च नमः। भीमायं च नमः। नमौ अग्रेवधायं च नर्मः। दूरेवधायं च नर्मः। नमौ हन्त्रे च नर्मः। हनीयसे च नर्मः। नमों वृक्षेभ्यो नमः। हरिकेशेभ्यो नमः। नर्मस्ताराय नर्मः। नर्मः शम्भवे च नर्मः। मयोभवें च नर्मः। नर्मः शङ्करायं च नर्मः। मयस्करायं च नर्मः। नर्मः शिवायं च नर्मः। शिवतराय च नमः। नमस्तीर्थ्याय च नमः। कूल्याय च नर्मः। नर्मः पार्याय च नर्मः। अवायीय च नर्मः। नर्मः प्रतरंणाय च नर्मः। उत्तरंणाय च नर्मः। नर्म आतायीय च नर्मः। आलाद्याय च नर्मः। नमः शष्याय च नर्मः। फेन्याय च नर्मः। नर्मः सिकत्याय च नर्मः। प्रवाह्याय च नर्मः॥

नमं इरिण्याय च नमः। प्रपथ्याय च नमः। नर्मः किश्शिलायं च नर्मः। क्षयंणाय च नर्मः। नर्मः कपर्दिने च नर्मः। पुलस्तये च नर्मः। नमो गोष्ठ्याय च नर्मः। गृह्याय च नर्मः। नमस्तल्प्याय च नर्मः। गेह्याय च नर्मः। नमः काट्याय च नमः। गहरेष्ठायं च नमः। नमौ हदय्याय च नमः। निवेषयाय च नमः। नर्मः पाश्सव्याय च नर्मः। रजस्याय च नर्मः। नमः शुष्क्याय च नमः। हरित्याय च नमः। नमो लोप्याय च नर्मः। उलप्याय च नर्मः। नमं ऊर्व्याय च नमः। सूम्यीय च नमः। नमः पुण्यीय च नमः। पर्णशद्याय च नमः। नमौऽपगुरमाणाय च नर्मः। अभिघ्नते च नर्मः। नमं आख्विद्ते च नमः। प्रिख्विद्ते च नमः। नमौ वो नमः। किरिकेभ्यो नर्मः। देवाना हदयभ्यो नर्मः। नमो विक्षीणकेभ्यो नर्मः। नर्मो विचिन्वत्केभ्यो नर्मः। नम् आनिर्हतेभ्यो नमः। नम् आमीवत्केभ्यो नमः।

## ॥प्रदक्षिणम्॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिद्रन्नीलेलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽमंमत्॥ या ते रुद्र शिवा तुनूः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसै॥ इमा रुद्रायं तवसं कपर्दिनं क्षयद्वीराय प्रभरामहे मृतिम्॥ यथां रुद्रोत नो मर्यस्कृधि क्षयद्वीराय नर्मसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मर्नुरायुजे पिता तद्श्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नौ महान्तमुत मा नौ अर्भुकं मा न उक्षेन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नौऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवौ रुद्र रीरिषः॥ मा नस्तोके तनेये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नौ रुद्र भामितोऽवधीर्ह्विष्मन्तो नर्मसा विधेम ते॥ आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्नमस्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रह्मधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं र्गर्तसदं युवनं मृगं न भीममुपह्लुमुग्रम्। मृडा जिर्तेत्रे रुद्र स्तवनो अन्यन्ते अस्मन्निवंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिवृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मुघवंद्यस्तनुष्व मीर्बस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुंघं निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनांकं बिभ्रदागिहि॥ विकिरिद् विलोहित् नर्मस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सुहस्रई हेतयोऽन्यमुस्मन्निवंपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तवं हेतर्यः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि॥ प्रदक्षिणं कृत्वा॥



#### ॥ नमस्काराः ॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषा सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१॥ अस्मिन् महत्यर्णवैऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषार् सहस्रयोजने-ऽव्धन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥२॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षेमाचराः। तेषार्थ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥३॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्रं रुद्रा उपश्रिताः। तेषार्रं सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥४॥ ये वृक्षेषु सुस्पिञ्जरा नीलंग्रीवा विलौहिताः। तेषा सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥५॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपुर्दिनः। तेषा सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥६॥ ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषा र सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥७॥ ये पथां पंथिरक्षय ऐलबृदा यव्युर्धः। तेषाई सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥८॥

ये तीर्थानि प्रचर्रन्ति सृकावन्तो निषक्षिणः। तेषार् सहस्रयोजने-ऽवधन्वनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥९॥

य एतावन्तश्च भूयार्श्तश्च दिशौ रुद्रा वितस्थिरे। तेषार्श् सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१०॥

नमौ रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्निमष्वस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दर्श प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नौ मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥११॥

नमां रुद्रेभ्यो यैंऽन्तरिक्षे येषां वात इषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दर्श प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोध्वांस्तेभ्यो नमस्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१२॥

नमों रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षिमषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१३॥

नमस्कारान् कृत्वा॥

# ॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना॥

अग्नविष्णू स्जोषसेमा वर्धन्तु वां गिरंः। युम्नैर्वाजेभिरागंतम्॥ वाजिश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे कर्तुश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽस्रंश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वाकं मे मनश्च मे चक्षुंश्च मे श्लोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहश्च म आयुश्च मे जरा चं म आत्मा चं मे तन्श्चं मे शर्मं च मे वर्मं च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे परूर्ंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्श्च मे जेमा च मे मिहमा च मे विर्मा च मे प्रिथमा च मे विष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सृत्यं च मे श्रद्धा च मे जग्नच मे धनं च मे वर्शश्च मे त्विषिश्च मे कीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जिन्ष्यमणि च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच मे सुगं च मे सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे ऋ्रां च मे क्रुप्तिश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥२॥

रां चं में मयंश्र में प्रियं चं मेऽनुकामश्रं में कामश्र में सौमनसश्रं में भद्रं चं में श्रेयंश्र में वस्यंश्र में यर्राश्र में भगंश्र में द्रविणं च में यन्ता च में धर्ता च में क्षेमश्र में धृतिश्र में विश्वं च में महंश्र में संविच्चं में ज्ञात्रं च में सूर्श्र में प्रसूर्श्र में सीरं च में ल्यश्रं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्षमं च मेऽनामयच में जीवातुंश्र में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृतं च मेऽभयं च में सुगं चं में श्रयंनं च में सूषा चं में सुदिनं च में॥३॥ ऊर्की मे सूनृतां च मे पर्यश्च मे रसंश्च मे घृतं चं मे मधुं च मे सिर्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्चं मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिद्यं च मे र्यिश्चं मे रायंश्च मे पुष्टं चं मे पुष्टिश्च मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्च मे पूर्णं चं मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे कूर्यवाश्च मेऽल्लं च मेऽक्षंच मे त्रीहर्यश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्राश्चं मे खल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे प्रियक्षंवश्च मेऽणवश्च मे श्यामकाश्च मे नीवाराश्च मे॥४॥

अरमां च में मृत्तिका च में गिरयंश्व में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पत्यश्च में हिरेण्यं च में ऽयंश्च में सीसं च में त्रपृश्च में रयामं चं में लोहं च में ऽग्निश्च म आपंश्च में वीरु घंश्च म ओषंघयश्च में कृष्टपुच्यं च में ग्राम्याश्च में पुराव आर्ण्याश्च युज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिश्च में भूतं च में भूतिश्च में वस्तु च में वस्तिश्च में कमें च में राक्तिश्च में ऽर्थश्च म एमंश्च म इतिश्च में गतिश्च में ॥५॥ अग्निश्च म इन्द्रश्च में सोमंश्च म इन्द्रश्च में सिवता च म इन्द्रश्च में स्मानश्च म इन्द्रश्च में स्ववता च म इन्द्रश्च में मित्रश्च म इन्द्रश्च में विष्णुश्च म इन्द्रश्च में त्वष्टां च म इन्द्रश्च में घाता च म इन्द्रश्च में विष्णुश्च म इन्द्रश्च में पृथिवी च म इन्द्रश्च में मुर्तिश्च म इन्द्रश्च में विश्वे च में देवा इन्द्रश्च में पृथिवी च म इन्द्रश्च में मुर्का च म इन्द्रश्च में पृथ्वी च म इन्द्रश्च में मुर्घा च म इन्द्रश्च में प्रजापितिश्च म इन्द्रश्च में दिर्शिश्च म इन्द्रश्च में मुर्घा च म इन्द्रश्च में प्रजापितिश्च म इन्द्रश्च में ॥६॥

अ॰्र्युश्चं मे र्िरमश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपा॰्र्युश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुकश्चं मे मन्थी चं म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे धुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयांश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पालीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥७॥ इध्मश्चं मे बहिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्त्रचंश्च मे चमुसाश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वर्रवश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवणे च मे द्रोणकल्वाश्चं मे वाय्व्यानि च मे प्त्मृचं म आध्वनीयंश्च म आग्नींग्नं च मे हिव्धानं च मे गृहाश्चं मे सदेश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाकारश्चं मे॥८॥

अग्निश्चं में घर्मश्चं में ऽर्कश्चं में सूर्यश्च में प्राणश्चं में ऽश्वमेंधश्चं में पृथिवी च में ऽदितिश्च में दितिश्च में द्यौश्चं में शर्करीरङ्गलेयों दिश्चंश्च में यज्ञेन कल्पन्तामृकं में सामं च में स्तोमश्च में यज्ञेश्च में दीक्षा चं में तपश्च म ऋतुश्चं में वृतं चं में ऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे चं में यज्ञेन कल्पेताम्॥९॥

गर्भाश्च मे वृत्सार्श्च मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी चं मे त्रिवृत्सर्श्च मे त्रिवृत्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्योही चं मे पष्टवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृहचं मेऽनुद्धां चं मे धेनुश्चं म आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां च्यानो यज्ञेनं कल्पतां चर्युर्यज्ञेनं कल्पतां चर्युर्यज्ञेनं कल्पतां चर्युर्यज्ञेनं कल्पतां चर्युर्वज्ञेनं कल्पतां यञ्जेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतां यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतामात्मा १०॥

एकां च में तिस्तर्श्च में पर्श्च च में स्पप्त चं में नवं च म एकांद्रा च में त्रयोंद्रा च में पर्श्चद्रा च में स्प्तर्द्रा च में नवंद्रा च म एकविश्वातिश्च में पर्श्चविश्वातिश्च में पर्श्चविश्वातिश्च में स्प्तिविश्वातिश्च में नवंविश्वातिश्च म एकित्रिश्वाच में त्रयंखिश्वाच में चतंस्त्रश्च में उद्योविश्वातिश्च में द्वाद्वातिश्च में द्वादिश्वातिश्च में द्वादिश्वातिश्च में द्वादिश्वाच में विश्वातिश्च में चतुर्विश्वातिश्च में द्वादिश्वाच में द्वादिश्वाच में चत्वारिश्वाच में चतुर्वश्वादिश्वाच में चतुर्वश्वादिश्वाच में चत्वश्वादिश्वाच में चतुर्वश्व मूर्या च व्यक्षियश्वान्त्यायनश्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चाधिपतिश्च॥११॥

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥

इडा देवहर्मनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानि शशसिष्विद्वश्चेदेवाः सूक्तवाचः पृथिवि मातुर्मा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासश शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

**\*\*\*** 

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वैभ्यः सर्वशर्वैभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवायं धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोद्यौत्॥

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ श्रीरुद्रजपः 55

तत्पुरुषाय विदाहें महादेवायं धीमहि।

तन्नौ रुद्रः प्रचोद्यौत्॥ (दशवारं जपेत्।)

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥



## ॥ प्रार्थना ॥



#### ॥श्रीरुद्रजपः॥

अस्य श्री रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्त्रस्य। अघोर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष रुद्रो देवता॥

नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः।

महादेवायेति कीलकम्।

श्री साम्बसदाशिवप्रसाद्सिद्धर्थे जपे विनियोगः॥

#### ॥करन्यासः॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्टाभ्यां नमः। दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः। चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः। निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सर्वकत्वात्मने करतलकरपृष्टाभ्यां नमः।

#### ॥ अङ्गन्यासः ॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः। दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा। चातुर्मास्यात्मने शिखाये वषट्। निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं। ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

#### ॥ ध्यानम्॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत् ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णेन्दु-वान्तामृतैः। अस्तोकाष्ठुतमेकमीशमिनशं रुद्रानुवाकान् जपन् ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिञ्चेच्छिवम्॥

ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भिसत-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गेः कण्ठे कालाः कपर्दा-किलत-शशि-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः। त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥ ॥पञ्चपूजा॥ लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि। हं आकाशात्मने पूष्पेः पूजयामि। यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि। रं अग्न्यात्मने दीपं दर्शयामि। वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गुणानां त्वा गुणपिति १ हवामहे कविं कवीनामुप्मश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

रां चं में मयंश्च में प्रियं चं मेऽनुकामश्च में कामश्च में सौमनसश्च में भद्रं चं में श्रेयंश्च में वस्यंश्च में यर्ताश्च में भगंश्च में द्रविणं च में यन्ता च में धर्ता च में क्षेमश्च में धृतिश्च में विश्वं च में महंश्च में सांविचं में ज्ञात्रं च में सूश्चं में प्रसूश्चं में सीरं च में लुयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्षमं च मेऽनामयच में जीवातुश्च में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभयं च में सुगं चं में रायंनं च में सूषा चं में सुदिनं च मे॥ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



#### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवतें रुद्राय॥ नर्मस्ते रुद्र मुन्यवं उतो त इर्षवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नर्मः॥ या त इर्षुः शिवर्तमा शिवं बुभूवं ते

धनुः। शिवा शर्य्या या तव तया नो रुद्र मृडय॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभुर्घस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ईसीः पुरुषं जगत्॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छवदामिस। यथा नः सर्वमिज्जगद्यक्ष्मः सुमना असत्॥ अध्यवोचद्धिवक्ता प्रथमो दैव्यौ भिषक्। अही 🖫 श्र सर्वौञ्जम्भयन्त्सर्वौश्च यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बुभुः सुमङ्गलंः। ये चेमाः रुद्रा अभितौ दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा १ हेर्ड ईमहे॥ असौ योऽवसपीत नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्वन्नद्दशमुद्दार्यः॥ उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढ़ुषै॥ अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नर्मः। प्र मुञ्ज धन्वनस्त्वमुभयोराहियोज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इष्वः परा ता भगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व सहस्राक्ष शतेषुधे॥ निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव। विज्यं धनुः कपुर्दिनो विश्वल्यो बाणवाश उत्।। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य निष्क्षिथः। या ते हेतिमी दुष्टम् नर्मस्ते अस्त्वायुधायानातताय धृष्णवै॥ उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः॥ अथो य ईषुधिस्तवऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥१॥

[नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिका[ला]ग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकुण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नर्मः॥]

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतंये नमो नमो वृक्षेभ्यो हिरंकेशेभ्यः पशूनां पतंये नमो नमेः सिरपन्नराय त्विषीमते पथीनां पतंये नमो नमो बभ्छशायं विव्याधिनेऽन्नानां पतंये नमो नमो हिरंकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतंये नमो नमो भवस्य हेत्ये जगतां पतंये नमो नमो रुद्रायातताविने क्षेत्राणां पतंये नमो नमे स्तायाहंन्त्याय वनानां पतंये नमो नमो रोहिताय स्थपतंये वृक्षाणां पतंये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतंये नमो नमो भवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतंये नमो नमे उच्चेशीषायाक्रन्द्यंते पत्तीनां पतंये नमो नमेः कृत्स्ववीताय धावंते सत्वेनां पतंये नमेः ॥२॥

 अश्वेभ्योऽश्वेपतिभ्यश्च वो नर्मः॥३॥

नमं आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम् उर्गणाभ्यस्तृश्-हृतीभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपितिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रात्पितिभ्यश्च वो नमो नमो गणभ्यो गणपितिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महन्द्यः, क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमो नमो रिथभ्योऽर्थभ्यश्च वो नमो नमो रथेभ्यो रथपितभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमः, श्वन्तृभ्यः सङ्गहीत्भ्यश्च वो नमो नमस्तक्षेभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुललिभ्यः कुमोरिभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमो नमं इषुकृन्धो धन्वकृन्धश्च वो नमो नमो मृग्युभ्यः श्विनिभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपितिभ्यश्च वो नमेः॥४॥

नमी भ्वायं च रुद्रायं च नमः शुर्वायं च पशुपत्ये च नमो नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपिदिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षायं च शतधंन्वने च नमो गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमो मीदुष्टमाय चेषुंमते च नमौ हृस्वायं च वामनायं च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धायं च संवृध्वंने च नमो अग्नियाय च प्रथमायं च नमं आशवें चाजिरायं च नमः शीप्रियाय च शीभ्याय च नमं ऊम्याय चावस्वन्याय च नमः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च॥५॥

नमौ ज्येष्ठायं च किन्छायं च नर्मः पूर्वजायं चापर्जायं च नर्मो मध्यमायं चापगुत्भायं च नर्मो जघुन्याय च बुध्नियाय च नर्मः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नर्म उर्वयाय च खल्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवायं च प्रतिश्रवायं च नमं आशुषेणाय चाशुरंथाय च नमः शूराय चावभिन्द्ते च नमो वर्मिणे च वर्ष्विने च नमो बिल्मिने च कव्चिने च नमः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥६॥

नमों दुन्दुभ्याय चाहन्त्याय च नमों घृष्णवें च प्रमृशायं च नमों दूतायं च प्रहिताय च नमों निष्क्षिणें चेषुधिमतें च नमेस्तीक्ष्णेषवें चायुधिनें च नमेः स्वायुधायं च सुधन्वने च नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमेः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सरस्याय च नमों नाद्यायं च वैश्वन्तायं च नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्यायं च नमों वेष्याय च विद्युत्याय च नमं ईिं प्रयाय चात्प्यायं च नमों वात्यायं च रेष्मियाय च नमों वास्त्व्याय च वास्तुपायं च ॥ ७॥

नमः सोमाय च रुद्रायं च नमस्ताम्रायं चारुणायं च नमः राङ्गायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमों हुन्त्रे च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शम्भवें च मयोभवें च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतराय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः पायीय चावायीय च नमः प्रतरंणाय चोत्तरंणाय च नमं आतायीय चालाद्याय च नमः शष्याय च फेन्याय च नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च॥८॥

नमं इरिण्याय च प्रपृथ्याय च नमः किश्शालायं च क्षयंणाय च नमः कपर्दिने च पुलुस्तये च नमो गोष्ट्याय च गृह्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमः काट्याय च गहरेष्ठायं च नमौ हद्य्याय च निवेष्प्याय च नमः पाश्सव्याय च रजस्याय च नमः शुष्क्याय च हित्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नमे ऊव्याय च सूम्याय च नमः पण्याय च पण्डाद्याय च नमोऽपगुरमाणाय चाभिष्टते च नमे आख्विदते च प्रख्विदते च नमो वः किरिकेभ्यो देवानाश हदयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमे आनिर्हतेभ्यो नमे आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिद्रन्नीलेलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽममत्॥ या ते रुद्र शिवा तुनूः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमा र रुद्रायं तवसं कपर्दिनं क्षयद्वीराय प्रभरामहे मृतिम्॥ यथा नः शमसंद्विपदे चर्तुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामं अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नौ रुद्रोत नो मर्यस्कृधि क्षयद्वीराय नर्मसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तद्श्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नौ महान्तमुत मा नौ अर्भकं मा न उक्षेन्तमुत मा ने उक्षितम्। मा नौऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नेस्तनुवौ रुद्र रीरिषः॥ मा नेस्तोके तर्नये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नौ रुद्र भामितोऽवधीर्हिवष्मन्तो नर्मसा विधेम ते॥ आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघे क्षयद्वीराय सुम्नमस्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्मधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं र्गर्तसदं युवनं मृगं न भीममुपह्लुमुग्रम्। मृडा जिर्तेत्रे रुद्र स्तर्वानो अन्यन्ते अस्मन्निवंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिवृणकु परि त्वेषस्यं दुर्मितिरंघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्र्यस्तनुष्वं मीर्बस्तोकायं तनयाय मृडय॥ मीर्बुष्टम् शिवंतम शिवो नः सुमनां भव। पर्मे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आचंर पिनांकं बिश्चदार्गिहे॥ विकिरिद् विलोहित नर्मस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्रं हेतयोऽन्यमस्मन्निवंपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषा सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि॥ अस्मिन् महत्यण्विऽन्तरिक्षे भवा अधि॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षंमाचरः॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवरं रुद्रा उपिश्रताः॥ ये वृक्षेषुं सस्पिक्षंग् नीलंग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपिर्दिनः॥ ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्॥ ये पृथां पिश्ररक्षंय ऐलबृदा यृव्युधः॥ ये तीर्थानि प्रचर्रन्ति सृकावन्तो निषक्षिणः॥ य एतावन्तश्च भूयार्श्सश्च दिशों रुद्रा वित्रस्थिरे॥ तेषार्श् सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां यैऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातो वर्षिमष्वस्तेभ्यो दश्च प्राचीर्दश्च दक्षिणा दर्श प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वांस्तेभ्यो नमस्ते नो मृख्यन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्भे द्धामि॥११॥

[त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योमुक्षीय माऽमृतात्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमी अस्तु॥ तर्मुष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयंति भेष्वजस्य। (ऋक्) यक्ष्वामहे सौमनसायं रुद्धं नमौभिर्देवमसुरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः। अयं मे विश्वभैषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि॥]

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

#### ॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नविष्णू स्जोष्सेमा वर्धन्तु वां गिरंः। चुम्नैर्वाजेभिरागतम्॥ वाजिश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे कर्तुश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वाकं मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च म ओजिश्च मे सहश्च म आयुश्च मे जरा चं म आत्मा चं मे तन्श्चं मे शर्मं च मे वर्मं च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे परूर्षं च च मे शरीराणि च मे॥ यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियों रुद्रो महर्षिः। हिर्ण्यगर्भं पंश्यत् जायंमान्श्चं स नो देवः शुभया स्मृत्याः संयुनकु॥

अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>महादेवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

ज्येष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमश्च मेऽमश्च मे जेमा च मे मिहमा च मे विर्मा च मे प्रिथमा च मे विष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगंच मे धनं च मे वर्राश्च मे त्विषिश्च मे कीडा च मे मोद्श्च मे जातं च मे जिन्ध्यमणि च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भिव्ध्यच मे सुगं च मे सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे कृप्तं च मे कृप्तिश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥

यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायौरित कश्चित्। वृक्ष ईव स्तब्यो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्॥ अनेन द्वितीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>शिवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥२॥

रां चं में मयंश्र में प्रियं चं मेऽनुकामश्रं में कामश्र में सौमनसश्रं में भद्रं चं में श्रेयंश्र में वस्यंश्र में यर्जाश्र में भगंश्र में द्रविणं च में यन्ता च में धर्ता च में क्षेमश्र में धृतिश्र में विश्वं च में महंश्र में संविच्चं में ज्ञात्रं च में सूर्श्र में प्रसूर्श्र में सीरं च में लुयश्रं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातुंश्र में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृतं च मेऽभयं च में सुगं चं में रायंनं च में सूषा चं में सुदिनं च में।

न कर्मणा न प्रजया धर्नेन त्यागेनैके अमृत्त्वमांनुशुः। परेण नाकं निहितं गुहांयां विभ्राजदेतद्यतयो विशन्ति॥ अनेन तृतीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>श्री रुद्रः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥३॥

ऊर्की मे सूनृतां च मे पर्यश्च मे रसंश्च मे घृतं चं मे मधुं च मे सिर्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्चं मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिद्यं च मे र्यिश्चं मे रायंश्च मे पुष्टं चं मे पुष्टिश्च मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्च मे पूर्णं चं मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे कूर्यवाश्च मेऽत्रं च मेऽक्षंच मे व्रीह्यंश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्राश्चं मे खल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे प्रियक्षंवश्च मेऽणवश्च मे स्यामकाश्च मे नीवाराश्च मे॥

वेदान्तिविज्ञानसुनिश्चितार्थाः सन्न्यांस योगाद्यतंयः शुद्धसत्त्वाः। ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे॥ अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शङ्करः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥४॥

अश्मां च में मृत्तिका च में गिरयंश्च में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पत्यश्च में हिरंण्यं च मेऽयंश्च में सीसं च में त्रपृश्च में श्यामं च में लोहं चं मेऽग्निश्चं म आपंश्च में वीरुधंश्च म ओषंधयश्च में कृष्टपच्यं चं मेऽकृष्टपच्यं चं में ग्राम्यार्श्च में पुशवं आर्ण्यार्श्च युज्ञेनं कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिश्च में भूतं चं में भूतिश्च में वस्तुं च में वस्तिश्चं में कमें च में शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमंश्च म इतिश्च में गतिश्च में॥

द्हं विपापं प्रमेंऽश्मभूतं यत्पुण्डरीकं पुरमध्यसङ्स्थम्। तत्रापि दहं गगनं विशोकस्तस्मिन् यदुन्तस्तदुपोसितव्यम्॥ अनेन पञ्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>नीललोहितः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥५॥

अग्निश्चं म इन्द्रंश्च में सोमंश्च म इन्द्रंश्च में सिवता चं म इन्द्रंश्च में सरंस्वती च म इन्द्रंश्च में पूषा चं म इन्द्रंश्च में बृहस्पतिश्च म इन्द्रंश्च में मित्रश्चं म इन्द्रंश्च में वरुणश्च म इन्द्रंश्च में त्वष्टां च म इन्द्रंश्च में धाता चं म इन्द्रंश्च में विष्णुंश्च म इन्द्रंश्च में ऽिश्वनौं च म इन्द्रंश्च में मुरुतंश्च म इन्द्रंश्च में विश्वें च में देवा इन्द्रंश्च में पृथिवी चं म इन्द्रंश्च में प्रिन्तरिक्षं च म इन्द्रंश्च में घौर्श्च म इन्द्रंश्च में प्रजापितिश्च म इन्द्रंश्च में॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्तै च प्रतिष्ठितः। तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः॥ अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>ईशानः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥६॥

अध्राश्चं मे रिश्मश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपाध्राश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्चं मे मन्थी चं म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वानुरश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्याश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयाश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पालीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>विजयः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥७॥

इध्मश्च में बहिश्च में वेदिश्च में घिष्णियाश्च में स्त्रचंश्च में चमुसाश्च में ग्रावणिश्च में स्वरंवश्च म उपर्वार्श्च मेऽधिषवणे च में द्रोणकल्डार्श्च में वाय्व्यानि च में पूत्भृच्च म आधवनीयश्च म आग्नींग्नं च में हिव्धानं च में गृहार्श्च में सदेश्च में पुरोडाशांश्च में पचतार्श्च मेंऽवभृथर्श्च में स्वगाकारश्च में॥

वामदेवाय नमौ ज्येष्ठाय नमी श्रेष्ठाय नमौ रुद्राय नमा कालीय नमा कलेविकरणाय नमो बलेविकरणाय नमो बलीय नमो बलेप्रमथनाय नमा सर्वभूतदमनाय नमौ मनोन्मनाय नमी॥ अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान सर्वात्मकः <u>भीमा</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥८॥

अग्निश्च में घर्मश्च में ऽर्कश्च में सूर्यश्च में प्राणश्च में ऽश्वमेधश्च में पृथिवी च में ऽदितिश्च में दितिश्च में द्यौश्च में शर्करीरङ्गलेयों दिश्चश्च में यज्ञेन कल्पन्तामृक में साम च में स्तोमश्च में यज्जेश्च में दीक्षा चं में तपश्च म ऋतुश्च में वृतं चं में ऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे चं में यज्ञेन कल्पेताम्॥

अघोरैंभ्योऽथ घोरैंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व्शर्वेभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्धरूपेभ्यः॥ अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>देवदेवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥९॥

गर्भौश्च मे वृत्साश्च मे त्र्यविश्व मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पञ्चविश्व मे पञ्चावी चं मे त्रिवृत्सर्श्च मे त्रिवृत्सा चं मे तुर्यवाचं

मे तुर्योही च मे पष्ठवार्च मे पष्ठौही च म उक्षा च मे वशा च म ऋषभश्च मे वेहच मेऽनुड्वां च मे धेनुश्च म आयुर्युज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतामपानो यज्ञेन कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पताङ् श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां मनौ यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्॥ तत्पुर्रुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नौ रुद्रः प्रचोद्यात्॥ अनेन दशम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः भवोद्भवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१०॥

एकां च में तिस्त्रश्च में पर्च च में सप्त च में नवं च म एकांद्रा च मे त्रयौद्श च मे पर्श्वदश च मे सप्तर्दश च मे नवंदश च म एकविश्वातिश्च मे त्रयोविश्वातिश्च मे पर्चविश्वातिश्च मे मे चर्तस्रश्च मेऽष्टौ चं मे द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्शतिश्चं मे चतुर्वि श्वातिश्च मेऽष्टावि श्वातिश्च में द्वात्रि श्वाच में षद्भि श्वाच में चत्वारिश्राचं मे चतुंश्चत्वारिश्शच मेऽष्टाचत्वारिश्शच मे वाजिश्च प्रसुवश्चापिजश्च कर्तुश्च सुवश्च मूर्घा च व्यक्षियश्चान्त्यायनश्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चाधिपतिश्च॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपितुर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

अनेन एकाद्रा-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः आदित्यात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥११॥

[इडा देवहर्मनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानि शश्सिषद्विश्वेदेवाः

सूक्तवाचः पृथिवि मात्मां मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विद्ष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासः शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुमदन्तु॥] ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

#### ॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपंतिश् हवामहे कविं कवीनामुप्मश्रवस्तमम्। ज्येष्टराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नूतिभिः सीद् साद्नम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नर्मस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नर्मः॥ या त इषुः शिवतमा शिवं बभूवं ते धनुः। शिवा शर्या या तव तया नो रुद्र मृखय॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्घ्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सी: पुरुषं जगत्॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छवदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मश सुमना असंत्॥ अध्यंवोचद्धिवक्ता प्रथमो दैव्यौ भिषक्। अही 🖫 श्र \_ सर्वौञ्जम्भयन्त्सर्वौश्च यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमार रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषार हेर्ड ईमहे॥ असौ योऽवसपीति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदरान्नदंशन्नुदहार्यः॥ उतैनं विश्वां भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढ़्षे॥ अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नर्मः। प्र मुं धन्वनस्त्व-मुभयोरार्लियोर्ज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इर्षवः परा ता भंगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व सहस्राक्ष शतेषुधे॥ निशीर्य शल्यानां मुखी शिवो नः सुमना भव। विज्यं धनुः कपर्दिनो विश्वल्यो बार्णवाश

उत॥ अनेशत्रस्येषेव आभुरंस्य निष्क्षिथिः। या ते हेतिमी दुष्टम् हस्ते बभूवं ते धनुः॥ तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिञ्जज। नमस्ते अस्त्वायुधायानातताय धृष्णवै॥ उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्त विश्वतः॥ अथो य इषुधिस्तवऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥१॥

नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिकालाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नर्मः॥

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतंये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पश्नूनां पतंये नमो नमेः सिर्पञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतंये नमो नमो बम्लुशाय विव्याधिनेऽन्नां पतंये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतंये नमो नमो भवस्य हेत्ये जर्गतां पतंये नमो नमो रुद्रायातताविने क्षेत्राणां पतंये नमो नमेः सूतायाहंन्त्याय वनानां पतंये नमो नमो रोहिताय स्थपतंये वृक्षाणां पतंये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतंये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतंये नमो नमे उच्चेधीषायाक्रन्द्यंते पत्तीनां पतंये नमो नमेः कृत्स्नवीताय धावंते सत्वनां पतंये नमेः॥२॥

नमः सहमानाय निव्याधिनं आव्याधिनीनां पर्तये नमो नमेः ककुभायं निषक्षिणे स्तेनानां पर्तये नमो नमो निषक्षिणं इषुधिमते तस्कराणां पर्तये नमो नमो वर्श्वते परिवर्श्वते स्तायूनां पर्तये नमो नमौ निचेरवे परिचरायारंण्यानां पत्ये नमो नमः सृकाविभ्यो जिघारंसद्यो मुष्णतां पत्ये नमो नमोऽसिमद्यो नक्तं चर्रद्यः प्रकृन्तानां पत्ये नमो नमं उष्णीिषणे गिरिचरायं कुलुञ्चानां पत्ये नमो नम् इषुमद्यो धन्वाविभ्यश्च वो नमो नमं आतन्वानेभ्यः प्रतिद्धनिभ्यश्च वो नमो नमं आयच्छेद्र्यो विसृजद्यश्च वो नमो नमोऽस्यद्यो विध्यद्यश्च वो नमो नम् आसीनेभ्यः शयनिभ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्यो जाग्रद्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्यो धार्वद्यश्च वो नमो नमः सुभाभ्यः सुभापितिभ्यश्च वो नमो नमो अश्वभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः॥३॥

नमं आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम् उर्गणाभ्यस्तृक्ष्-हृतीभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपितभ्यश्च वो नमो नमो वात्तेभ्यो वात्तपितभ्यश्च वो नमो नमो गणभ्यो गणपितभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महन्द्राः, क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमो नमो रिथभ्योऽर्थभ्यश्च वो नमो नमो रथैभ्यो रथपितभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमः, श्वन्तुभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमस्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुललिभ्यः कुमिरिभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमो नमं इषुकृद्धो धन्वकृद्धश्च वो नमो नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपितिभ्यश्च वो नमो नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपितिभ्यश्च वो नमो नमो ॥४॥

नमों भ्वायं च रुद्रायं च नमः शुर्वायं च पशुपत्ये च नमो नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठीय च नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षायं च शतधन्वने च नमों गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमों मीढुएंमाय चेषुंमते च नमों हृस्वायं च वामनायं च नमों बृह्तते च वर्षीयसे च नमों वृद्धायं च संवृध्वंने च नमों अग्रियाय च प्रथमायं च नमं आश्वं चाजिरायं च नमः शीघ्रियाय च शीभ्याय च नमं ऊम्यीय चावस्वन्याय च नमः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च॥५॥

नमौ ज्येष्ठायं च कनिष्ठायं च नमः पूर्वजायं चापरजायं च नमौ मध्यमायं चापगल्भायं च नमौ जघन्याय च बुधियाय च नमः सोभ्याय च प्रतिसयीय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमं उर्वयीय च खल्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमो वन्याय च कक्ष्याय च नर्मः श्रवायं च प्रतिश्रवायं च नर्म आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभिन्दते च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमों बिल्मिने च कवचिने च नर्मः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥६॥ नमों दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमों धृष्णवें च प्रमृशायं च नमों दूतायं च प्रहिताय च नमौ निषिक्षिणे चेषुधिमते च नर्मस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नर्मः स्वायुधायं च सुधन्वने च नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नर्मः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सर्स्याय च नमौ नाद्यायं च वैश्वन्तायं च नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वष्याय चावर्ष्यायं च नमों मेध्याय च विद्युत्याय च नमं ईिंध्रयाय चातुप्याय च नमो वात्याय च रेष्मियाय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च॥७॥

नमः सोमाय च रुद्रायं च नमस्ताम्रायं चारुणायं च नमः राङ्गायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमीं हुन्त्रे च हनीयसे च नमीं वृक्षेभ्यों हरिकेशेभ्यों नर्मस्ताराय नर्मः शम्भवें च मयोभवें च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च नम्स्तीर्थ्याय च कूल्याय च नर्मः पायीय चावायीय च नर्मः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नर्म आतायीय चालाद्याय च नमः शष्याय च फेन्याय च नर्मः सिकत्याय च प्रवाह्याय च॥८॥

नमं इरिण्याय च प्रपृथ्याय च नमः किश्हालायं च क्षयंणाय च नमः कपर्दिने च पुलुस्तये च नमो गोष्ठ्याय च गृह्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमः काट्याय च गहरेष्ठायं च नमो हृद्य्याय च निवेष्याय च नमः पाश्सव्याय च रजस्याय च नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमो लोप्याय चोलुप्याय च नमं ऊव्याय च सूर्म्याय च नमः पुण्याय च पर्णहाद्याय च नमोऽपगुरमाणाय चाभिन्नते च नमं आख्विद्ते च प्रख्विद्ते च नमो वः किरिकेभ्यो देवानाश् हृदयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमं आनिरहतेभ्यो नमं आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिद्वन्नीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पेशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽमंमत्॥ या ते रुद्र शिवा तनः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसे॥ इमा रुद्रायं तवसे कपिदिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मितिम्॥ यथां नः शमसिद्विपदे चतुंष्यदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ मृडा नो रुद्रोत नो मर्यस्कृधि क्षयद्वीराय नर्मसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदंश्याम तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भुकं मा न उक्षंन्तमुत मा ने उिश्वतम्। मा

नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा र्नस्तोके तर्नये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तो नर्मसा विधेम ते॥ नो अधि च देव ब्रूह्यधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं र्गर्तसदं युवनि मृगं न भीममुपह्लुमुग्रम्। मृडा जिर्तेत्रे रुद्र स्तवनि अन्यन्ते अस्मन्निवेपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्य हेतिवृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मितिरंघायोः। अवं स्थिरा मुघवंद्यस्तनुष्व मीर्बस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुष्टम शिवंतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसीन आ चर पिनीकं बिभ्रदा हेतयोऽन्यमस्मन्निवंपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तवं हेतर्यः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषा सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि॥ अस्मिन् महत्यण्विऽन्तरिक्षे भवा अधि॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः श्वां अधः, क्षमाचराः॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवरं रुद्रा उपिश्रताः॥ ये वृक्षेषुं सिस्पर्ञ्चरा नीलंग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः॥ ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्॥ ये पथां पिथरक्षय ऐलबृदा यव्युधः॥ ये तीर्थानि प्रचर्रन्ति सृकावन्तो निषक्षिणः॥ य एतावन्तश्च भूयारंसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे॥ तेषारं शिवाभिमर्शनः॥

सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ नमीं रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येंऽन्तिरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातीं वर्षमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दर्श दिक्षणा दर्श प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वास्तेभ्यो नमस्ते नौ मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्में दधामि॥११॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पृष्टिवधीनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योमुक्षीय माऽमृतात्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्में रुद्राय नमी अस्तु॥ तम्षुहृह यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयिति भेषजस्य। (ऋक्) यक्ष्वामहे सौमन्सायं रुद्रं नमौभिर्द्वमसुरं दुवस्य॥ अयं में हस्तो भर्गवानयं मे भर्गवत्तरः। अयं मैं विश्वभैषजोऽयं

ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मत्यीय हन्तवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

#### ॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नविष्णू स्जोषंसेमा वर्धन्तु वां गिरंः। चुन्नैर्वाजेभिरागतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे कर्तृश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसृश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वार्क मे मनश्च मे चक्षुंश्च मे श्लोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहश्च म आयुंश्च मे जरा चं म आत्मा चं मे तुनृश्चं मे शर्मं च मे वर्मं च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे परूर्ंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्येष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे मिहमा च मे विर्मा च मे प्रिथमा च मे विष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सृत्यं च मे श्रद्धा च मे जगंच मे धनं च मे वर्राश्च मे त्विषिश्च मे कीडा च मे मोद्श्च मे जातं च मे जिन्ध्यमणि च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भिवष्यच मे सुगं च मे सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे कृतं च मे कृतिश्च मे मृतिश्चं मे सुमितिश्चं मे॥२॥

रां चं में मयंश्र में प्रियं चं मेऽनुकामश्रं में कामश्र में सौमनसश्रं में भद्रं चं में श्रेयंश्र में वस्यंश्र में यर्जाश्र में भगंश्र में द्रविणं च में यन्ता च में धर्ता च में क्षेमश्र में धृतिश्र में विश्वं च में महंश्र में सांविचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्व में प्रसूर्श्व में सीरं च में लुयर्श्व म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातुंश्व में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृतं च मेऽभयं च में सुगं चं में श्रयंनं च में सूषा चं में सुदिनं च में॥३॥ ऊर्की मे सूनृतां च मे पर्यश्च मे रसंश्च मे घृतं चं मे मधुं च मे सिर्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्चं मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिद्यं च मे र्यिश्चं मे रायंश्च मे पुष्टं चं मे पुष्टिश्च मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्च मे पूर्णं चं मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे कूर्यवाश्च मेऽल्लं च मेऽक्षंच मे त्रीहर्यश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्राश्चं मे खल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे प्रियक्षंवश्च मेऽणवश्च मे श्यामकाश्च मे नीवाराश्च मे॥४॥

अरमां च में मृत्तिका च में गिरयंश्व में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पत्यश्च में हिरंण्यं च में ऽयंश्व में सीसं च में त्रपृश्च में रयामं चं में लोहं च में ऽग्निश्च म आपंश्च में वीरु धंश्च म ओषंधयश्च में कृष्टपुच्यं च में शाम्याश्च में पुराव आर्ण्याश्च यहाने कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिश्च में भूतं च में भूतिश्च में वस्तु च में वस्तिश्च में कमें च में रातिश्च में प्रमेश्च म इतिश्च में गतिश्च में ॥५॥ अग्निश्च म इन्द्रश्च में सोमश्च म इन्द्रश्च में सिवता च म इन्द्रश्च में स्रमेश्च म इन्द्रश्च में स्वता च म इन्द्रश्च में प्राता च म इन्द्रश्च में विष्णुश्च म इन्द्रश्च में त्वष्टां च म इन्द्रश्च में घाता च म इन्द्रश्च में विष्णुश्च म इन्द्रश्च में पृथिवी च म इन्द्रश्च में मुर्तिश्च म इन्द्रश्च में विश्व च में देवा इन्द्रश्च में पृथिवी च म इन्द्रश्च में मुर्या च म इन्द्रश्च में याश्च म इन्द्रश्च में दिर्वाश्च म इन्द्रश्च में मुर्या च म इन्द्रश्च में प्रजापितिश्च म इन्द्रश्च में दिर्वाश्च म इन्द्रश्च में प्रजापितिश्च म इन्द्रश्च में ॥ ६॥ ॥

अध्रुश्चं मे रिश्मश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपा्ध्रुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुकश्चं मे मन्थी चं म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे धुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयांश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पालीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥७॥ इध्मश्चं मे बहिंश्चं मे वेदिंश्च मे धिष्णियाश्च मे स्त्रचंश्च मे चमुसाश्चं मे ग्रावणिश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवणे च मे द्रोणकलुशश्चं मे वाय्व्यानि च मे पूत्भृचं म आध्वनीयंश्च म आग्नींधं च मे हविर्धानं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाकारश्चं मे॥८॥

अग्निश्चं में घर्मश्चं में ऽर्कश्चं में सूर्यश्च में प्राणश्चं में ऽश्वमेंधश्चं में पृथिवी च में ऽदितिश्च में दितिश्च में द्यौश्चं में शर्करीरङ्गलेयों दिश्चंश्च में यज्ञेन कल्पन्तामृकं में सामं च में स्तोमश्च में यज्ञेश्च में दीक्षा चं में तपश्च म ऋतुश्चं में वृतं चं में ऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे चं में यज्ञेन कल्पेताम्॥९॥

गर्भाश्च मे वृत्सार्श्च मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी चं मे त्रिवृत्सर्श्च मे त्रिवृत्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्योही चं मे पष्टवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृहचं मेऽनुद्धां चं मे धेनुश्चं म आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो युज्ञेनं कल्पतां प्राणो युज्ञेनं कल्पतां प्राणो युज्ञेनं कल्पतां चक्षुर्यज्ञेनं कल्पतां चश्चर्यज्ञेनं कल्पतां चश्चर्यज्ञेनं कल्पतां चश्चर्यज्ञेनं कल्पतां युज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा युज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा युज्ञेनं कल्पतामा १०॥

एकां च में तिस्त्रश्चं में पर्ञ्चं च में स्प्ता चं में नवं च म एकांद्रा च में त्रयोंद्रा च में पर्ञ्चंद्रा च में स्प्ताद्रा च में नवंद्रा च म एकविश्रातिश्च में त्रयोविश्रातिश्च में पर्ञ्चविश्रातिश्च में स्प्ताविश्रातिश्च में नवंविश्रातिश्च म एकित्रिश्राच में त्रयंस्त्रिश्च में चतंस्त्रश्च में ठिश्रातिश्च में द्वाद्रातिश्च में चतंस्त्रश्च मेंऽष्टाविश्रातिश्च में द्वात्रिश्च में चतंश्रित्रश्च मूर्धा च व्यक्षियश्चान्त्यायनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चाधिपतिश्च॥११॥

इडा देवहूर्मनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानि शशसिष्दिश्वेदेवाः सूक्तवाचः पृथिवि मातुर्मा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासश शुश्रूषेण्यौ मनुष्यैभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभायै पितरोऽनुंमदन्तु॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

### ॥ पुरुषसूक्तम् ॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतौ वृत्वा। अर्त्यतिष्ठदृशाङ्गुलम्॥ पुरुष एवेदश सर्वम्॥ यद्भूतं यच्च भव्यम्॥ उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहिति॥ एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायार्ङ्श्च पूर्रुषः। पादौऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौऽस्येहाऽऽभवात्पुनः। ततो विश्वञ्चंकामत्। सारानानराने अभि॥ तस्माँद्विरार्डजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पृश्चाद्भूमिमथौ पुरः॥ यत्पुरुषेण हविषां। देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शुरद्धविः॥ सप्तास्यऽऽसन् परिधर्यः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातम्यतः। तेन देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञात्सर्वेहुतः। सम्मृतं पृषद्ाज्यम्। पुशूङ्स्ताङ्श्र्वेके वायुव्यान्। आर्ण्यान्याम्याश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञात्सर्वेहुतः। ऋचः सामोनि जिज्ञरे। छन्दार्श्से जिज्ञिरे तस्मौत्। यजुस्तस्मोदजायत॥ तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चौभयादेतः। गावौ ह जिज्ञरे तस्मौत्। तस्मौज्ञाता अजावयः॥ यत्पुर्रुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किर्मस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥ ब्राह्मणौऽस्य मुखमासीत्। बाह्र राजन्यः कृतः। ऊरू तर्दस्य यद्वैश्यः। पुन्धाः शूद्रो अजायत॥ चुन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीष्णीं द्यौः

समेवर्तत। पद्मां भूमिर्दिशः श्रोत्रौत्। तथो लोकाश अंकल्पयन्॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवद्न् यदास्तै॥ धाता पुरस्ताद्यमुदाजहारं। शकः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥ यज्ञेनं युज्ञम्यजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ अद्यः सम्भूतः पृथिव्यै रसाँच। विश्वकर्मणः समवर्तताधि। तस्य त्वष्टा विदर्धद्रपमेति। तत्पुर्रुषस्य विश्वमाजानमग्रै॥ वेदाहमेतं पुर्रुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्थां विद्यतेऽयनाय॥ प्रजापंतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजार्यमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदिमिच्छिन्ति वेधसः॥ यो देवेभ्य आर्तपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं बाह्मं जनयन्तः। देवा अग्रे तद्बुवन्। यस्त्वैवं बाह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा असन् वर्शे॥ हीश्चं ते लक्ष्मीश्च पल्यौ। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षेत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मेनिषाण। अमुं मेनिषाण। सर्वं मनिषाण॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

### ॥ नारायणसूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – १३)

सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वश्चम्भुम्। विश्वं नारायणं देवमक्षरं पर्मं पदम्। विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणः हिरम्। विश्वमेवेदं पुरुषस्तिद्वश्वमुपंजीवित। पितं विश्वस्यऽऽत्मेश्वर्थः शाश्वतः शिवमंच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम्। नारायणपरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायण परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः। नारायणः परः। यच्चं किञ्चिज्ञंगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा॥

अन्तर्बहिश्चे तत्सर्वे व्याप्य नारायणः स्थितः। अनेन्तमव्ययं कविश् संमुद्रेऽन्तं विश्वराम्भुवम्। पुद्मकोश प्रतीकाशः हृदयं चाप्यधोमुंखम्। अधो निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति। ज्वालुमालाकुलं भाती विश्वस्यऽऽयतनं महत्। सन्तंतः शिलाभिस्तुलम्बत्याकोश्चसन्निभम्। तस्यान्ते सुषिर सूक्ष्मं तस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानं-मिर्विश्वाचिर्विश्वतोमुखः। सोऽग्रेभुग्विभजन्तिष्टन्नाहारमजुरः कविः। तिर्यगूर्ध्वमधः शायी रश्मयस्तस्य सन्तता। सन्तापयति स्वं देहमापदितलमस्तकः। तस्य मध्ये विह्विशिखा अणीयौर्ध्वा व्यवस्थितः। नीलतौयद्मध्यस्थाद्विद्युष्ट्रेखेव भार्स्वरा। नीवार्श्क्वत्तन्वी पीता भास्वत्यणूर्पमा। तस्याः शिखाया मध्ये परमातमा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोऽक्षरः पर्मः स्वराट्॥ ऋतः सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नर्मः। नारायणायं विद्महें वासुदेवायं धीमहि। तन्नौ विष्णुः प्रचोदयात्।

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजाईसि यो अस्कभायदुत्तर स्पधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णोर्राटमिस विष्णोः पृष्ठमिसि विष्णोः श्रम्नैस्थो विष्णोः स्यूरिस विष्णोर्ध्वयमिस वैष्णवमिसि विष्णवे त्वा॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

### ॥ विष्णुसूक्तम्॥

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजार्रसि यो अस्कभायुदुत्तरं सुधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोर्रुगायः॥

तदंस्य प्रियमभिपाथों अश्याम्। नरो यत्रं देवयवो मदंन्ति। उरुकमस्य स हि बन्धुंरित्था। विष्णौः पदे पर्मे मध्व उत्थ्सः। प्र तिद्वष्णुः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा। परो मात्रया तनुवा वृधान। न ते महित्वमन्वेश्चवन्ति॥

उमे ते विद्य रजेसी पृथिव्या विष्णों देवत्वम्। प्रमस्यं विथ्से। विचंकमे पृथिवीमेष प्ताम्। क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन्। ध्रुवासों अस्य कीरयो जनांसः। उरुक्षितिः सुजनिमाचकार। त्रिर्देवः पृथिवीमेष प्ताम्। विचंकमे शतचींसं महित्वा। प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान्। त्वेषङ्ह्यंस्य स्थविरस्य नामं॥

### ॥भूसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् – १/प्रपाठकः – ५/अनुवाकः – ३)

भूमिर्भूम्ना द्यौर्वीर्णाऽन्तिरिक्षं मिह्त्वा। उपस्थे ते देव्यदितेऽग्नि-मन्नादमन्नाद्यायाऽऽद्धे। आऽयङ्गोः पृश्चिरकमीदस्नन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्त्सुवंः। त्रिष्ट्रशाद्धाम् वि राजिति वाक्पतङ्गायं शिश्रिये। प्रत्यंस्य वह द्युभिः। अस्य प्राणाद्पानृत्यंन्तश्चरित रोचना। व्यंख्यन् महिषः सुवंः॥

यत्त्वं कुद्धः परोवपं मन्युना यद्वंत्र्या। सुकल्पंमग्ने तत्तव पुनस्त्वोद्दीपयामिस। यत्ते मन्युपंरोप्तस्य पृथिवीमन् दध्वसे। आदित्या विश्वे तद्देवा वसंवश्च समाभरन्। मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं यज्ञश् सिममं दंधातु। बृहस्पतिस्तनुतािममं नो विश्वे देवा इह मादयन्ताम्। सप्त ते अग्ने सिमधंः सप्त जिह्वाः सप्तर्षयः सप्त धामं प्रियाणि।

सप्त होत्राः सप्तधा त्वां यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेने। पुनेरूजी नि वर्तस्व पुनेरम्न इषाऽऽयुषा। पुनेर्नः पाहि विश्वतः। सह रय्या नि वर्तस्वाऽम्ने पिन्वस्व धार्रया। विश्विपस्त्रया विश्वतस्परि। लेकः सलेकः सुलेकस्ते ने आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु केतः सकेतः सुकेतस्ते ने आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु विवस्वाश् अदितिर्देवजूतिस्ते ने आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु।

# ॥दुर्गा सूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – २)

जातवेदसे सुनवाम् सोमं मरातीयतो निद्हाति वेदः। स नः पर्षदित दुर्गाणि विश्वां नावेव सिन्धं दुरिताऽत्यिः॥१॥

तामुग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफुलेषु जुष्टौम्। दुर्गां देवी शर्रणमहं प्रपंद्ये सुतर्रसि तरसे नर्मः॥२॥

अये त्वं परिया नव्यौ अस्मान्थ्स्वस्तिभिरित दुर्गाणि विश्वौ। पूर्श्व पृथ्वी बेहुला ने उर्वी भर्वा तोकाय तनियाय शंयोः॥३॥

विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरिताऽतिपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनेसा गृणानौऽस्माकं बोध्यविता तुनूनाम्॥४॥

पृतना जित्र सहमानमुग्रम् द्विय पर्माथ्स्थस्थात्। सनः पर्षदिति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अति दुरितात्यिः॥५॥

प्रलोषि कमीड्यो अध्वरेषुं सनाच होता नव्यंश्च सित्सि। स्वाञ्चौग्ने तनुवं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौर्भगमार्यजस्व॥६॥

गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवैन्द्र विष्णोरनुसर्श्वरेम। नार्कस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम्॥७॥

> कात्यायनायं विद्महें कन्यकुमारि धीमहि। तन्नों दुर्गिः प्रचोदयात्॥

## ॥श्रीस<mark>ू</mark>क्तम्॥

हिरंण्यवर्णों हरिणीं सुवर्णरंजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनदिप्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्रये श्रीमीदेवीर्जुषताम्॥३॥

कां सोऽस्मितां हिर्रण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलेन्तीं तृप्तां तर्पर्यन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवणीं तामिहोपेह्वये श्रियम्॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुंष्टामुद्राराम्। तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपेचेऽलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणे॥५॥

आदित्यवेर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पितस्तवे वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फर्लानि तपसा नुंदन्तु मायान्तरायाश्चे बाह्या अंलक्ष्मीः॥६॥

> उपैतु मां देवस्रखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं दद्ातु मे॥७॥

क्षुत्पिपासामेलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुदं मे गृहात्॥८॥

गुन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपृष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥९॥

तां

मनेसः काममाकूतिं वाचः सत्यमेशीमहि। पुशूनां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रीयतां यद्याः॥१०॥ कर्दमेन प्रजाभूता मिय सम्भव कर्दम। श्रियं वासर्य में कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ ११॥ आपः सृजन्तुं स्निग्धानि चिक्कीत वंस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं मे कुले॥१२॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मेयीं लुक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१३॥ आर्द्रौ यः करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पेद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातेवेदो म आवह॥१४॥ जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। आर्वह यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावौ दास्योऽश्वौन् विन्देयं पुरुषानहम्॥ १५॥ महादेव्ये चं विदाहें विष्णुपल्ये चं धीमहि। तन्नों लक्ष्मीः प्रचोदयांत्॥

## ॥ मेधासूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – ४१–४४)

मेधादेवी जुषमाणा न आगाँद्विश्वाची भद्रा सुमनस्यमाना। त्वया जुष्टी नुदमाना दुरुक्तान् बृहर्द्वदेम विदथे सुवीराः। त्वया जुष्टे श्रृषिभेवति देवि त्वया ब्रह्मांऽऽगतश्रीरुत त्वया। त्वया जुष्टेश्चित्रं विन्दते वसु सानो जुषस्य द्रविणो न मेधे॥ मेधां म इन्द्रौ ददातु मेधां देवी सरेस्वती। मेधां में अश्विनां वुभावार्धत्तां पुष्करस्रजा। अप्सरास्तुं च या मेधा गन्धवेषुं च यन्मनः। देवीं मेधा सरेस्वती सा मां मेधा सुरिभर्जुषता इस्वाहा॥ आ मां मेधा सुरिभर्विश्वरूपा हिरेण्यवर्णा जगती जगम्या। ऊर्जिस्वती पर्यसा पिन्वमाना सा मां मेधा सुप्रतीका जुषन्ताम्। मिथे मेधां मिथे प्रजां मय्यग्निस्तेजो दधातु मिथे मेधां मिथे प्रजां मयी मुधां मिथे प्रजां मिथे स्थातु मिथे मेधां मिथे प्रजां मिथे सूर्यो भ्राजो दधातु।

### ॥भाग्यसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् - ३/प्रश्नः - ८/अनुवाकम् - ९)

प्रातर्िम्नं प्रातिरन्द्रई हवामहे प्रातिमेत्रा वर्रुणा प्रातरिश्वना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रह हेवेम॥१॥

प्रातिर्जितं भर्गमुयश हुवेम वयं पुत्रमिदितेर्यो विधर्ता। आर्द्रिश्चिद्यं मन्यमानस्तुरिश्चद्राजां चिद्यं भर्गं भक्षीत्याहं॥२॥

भग प्रणेतुर्भग सत्यंराधो भगेमां धियमुद्वदद्नः। भगप्रणो जनय गोभिरश्वेर्भगुप्रनृभिनृवन्तः स्याम॥३॥

उतेदानीं भर्गवन्तः स्यामोत प्रित्व उत मध्ये अह्नाम्। उतोदिता मघवन्थ्सूर्यस्य वयं देवानार् सुमृतौ स्याम॥४॥

भर्ग एव भर्गवाश अस्तु देवास्तेनं वयं भर्गवन्तः स्याम। तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीमि सनौ भग पुर एता भवेह॥५॥

सर्मध्वरायोषसौऽनमन्त दधिकावैव शुचेये पदाये। अर्वाचीनं वसुविदं भगन्नो रथिमवाश्वीवाजिन आवहन्तु॥६॥

अश्ववितीर्गोमेतीर्ने उषासौ वीरवेतीः सदेमुच्छन्तु भद्राः। घृतं दुर्हाना विश्वतः प्रपीनायूयं पति स्वस्तिभिः सदो नः॥७॥

यो माँऽग्ने भागिनई सन्तमथाभागं चिकीर्षति। अभागमंग्ने तं कुरु मामंग्ने भागिनं कुरु॥८॥

### ॥ पवमानसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् - १/प्रश्नः - ४/अनुवाकः - ८)

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् - ५/प्रपाठकः - ६/अनुवाकः - १)

ॐ तच्छं योरावृणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नौ अस्तु द्विपदै। शं चतुष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। द्धिकाव्ण्णौ अकार्षम्। जिष्णोरश्वस्य वाजिनैः। सुरिमनो मुर्खाकरत्। प्रण आयू १ वि तारिषत्। आपो हि ष्ठा मेयो भुवस्ता ने ऊर्जे देघातन। महेरणाय चक्षसे। यो वंः शिवतमो रसस्तस्यं भाजयते ह नंः। उशतीरिव मातरंः। तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वेथ। आपौ जनयेथा च नः॥ हिरंण्यवर्णाः शुचंयः पावका यासुं जातः कुश्यपो यास्विन्द्रः। अग्निं या गर्भं द्धिरे विरूपास्ता न आपः शङ्क स्योना भवन्तु॥ यासा<u>र</u> राजा वर्रुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यं जनानाम्। मधुश्रुतः शुर्चयो याः पविकास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥ यासाँ देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति। याः पृथिवीं पर्यसोन्दन्ति शुक्रास्ता नु आपः शङ् स्योना भवन्तु॥ शिवेन मा चक्षुंषा पश्यताऽऽपः शिवयां तनुवोपं स्पृशत त्वचं मे। सर्वार् अग्नीश रेप्सुषदों हुवे वो मिय वर्ची बलुमोजो नि र्घत्त॥ पर्वमानः सुवर्जनः। पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा। पुनन्तुं मा देवजनाः। पुनन्तु मर्नवो धिया। पुनन्तु विश्वं आयर्वः। कत्वा कतूर रनुं। यत्ते पवित्रमिचिषि। अग्ने वितंतमन्तरा। ब्रह्म

तेनं पुनीमहे। उभाभ्यां देवसवितः। पवित्रेण सवेनं च। इदं ब्रह्मं पुनीमहे। वैश्वदेवी पुनती देव्यागात्। यस्यै बह्वीस्तनुवौ वीतपृष्ठाः। तया मद्दन्तः सधमाद्येषु। वयङ् स्याम् पत्रयो रयीणाम्। वैश्वानरो रिंमिर्मिर्मा पुनातु। वार्तः प्राणेनेषिरो मयो भूः। द्यावीपृथिवी पर्यसा पयोभिः। ऋतावरी यज्ञिये मा पुनीताम्। बृहद्भिः सवितस्तृभिः। वर्षिष्ठेर्देवमन्मभिः। अग्ने दक्षैः पुनाहि मा। येनं देवा अपनत। येनऽऽपौ दिव्यङ्कराः। तेन दिव्येन ब्रह्मणा। इदं ब्रह्म पुनीमहे। यः पविमानीरध्येति। ऋषिभिः सम्भृति रसम्। सर्वे रसप्। सर्वे रस् स्वदितं मातुरिश्वना। पावमानीर्यो अध्येति। ऋषिभिः सम्मृतः रसम्। तस्मै सरस्वती दुहे। क्षीर स्पर्पिर्मधूदकम्॥ पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुदुघाहि पर्यस्वतीः। ऋषिभिः सम्भृतो रसंः। ब्राह्मणेष्वमृत १ हितम्। पावमानीदिशन्तु नः। इमं लोकमथौ अमुम्। कामान्त्समर्धयन्तु नः। देवीदेवैः समाभृताः। पावमानीः बाह्मणेष्वमृतर् हितम्। येनं देवाः पवित्रेण। आत्मानं पुनते सद्।। तेन सहस्रधारेण। पावमान्यः पुनन्तु मा। प्राजापत्यं पवित्रम्। <u>श्वातोद्य</u>ांम १ हिर्ण्मयम्। तेन ब्रह्म विदो वयम्। पूतं ब्रह्म पुनीमहे। इन्द्रंः सुनीती सहमा पुनातु। सोमः स्वस्त्या वरुणः समीच्या। यमो राजाँ प्रमृणाभिः पुनातु मा। जातवेदा मोर्जयन्त्या पुनातु। भूर्भुवः सुर्वः।

तच्छं योरावृणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नौ

अस्तु द्विपदै। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

### ॥ आयुष्यसूक्तम्॥

यो <u>ब्र</u>ह्मा ब्रह्मण उंज्<u>ञहार प्राणैः शिर</u>ः कृत्तिवासाः पिनाकी। ईशानो देवः स न आयुर्दधातु तस्मै जुहोमि हविषा घृ<u>ते</u>न॥१॥

विभ्राजमानः सरिरस्य मध्याद्रोचमानो घर्मरुचिर्य आगात्। स मृत्युपाशानपर्नुद्य घोरानिहायुषेणो घृतमंत्तु देवः॥२॥

ब्रह्मज्योतिर्ब्रह्मपत्नीषु गुर्भं यमाद्धात् पुरुरूपं जयन्तम्। सुवर्णरम्भग्रहमंकमुर्च्यं तुमायुषे वर्धयामौ घृतेन॥३॥

श्रियं लक्ष्मीमौबलामम्बिकां गां षष्ठीं च यामिन्द्रसेनैत्युदाहुः। तां विद्यां ब्रह्मयोनिर्रं सरूपामिहायुषे तर्पयामौ घृतेन॥४॥

दाक्षायण्यः सर्वयोन्यः स योन्यः स<u>हस्र</u>शो विश्वरूपां विरूपाः। ससूनवः सपतर्यः सयूथ्या <u>आयुषे</u>णो घृतमिदं जुषन्ताम्॥५॥

दिव्या गणा बहुरूपाः पुराणा आयुदिछदो नः प्रमर्थन्तु वीरान्। तेभ्यो जुहोमि बहुधां घृ<u>तेन</u> मा नः प्रजाश्र रीरिषो मौत वीरान्॥६॥

एकः पुरस्ताद्य इदं बभूव यतो बभूव भुवनस्य गोपाः। यमप्येति भुवनः साम्पराये स नो हविर्घृतिमहायुषैत्त देवः॥७॥ वसून् रुद्रानादित्यान् मरुतोऽथ साध्यान् ऋभून् यक्षान् गन्धर्वाङ्श्र पितृःश्र्यं विश्वान्। भृगून् सर्पाङ्श्राङ्गिरसौऽथ सर्वान् घृतः हुत्वा स्वायुष्या महयाम शुश्वत्॥८॥

> विष्णो त्वं नो अन्तमः शर्मं यच्छ सहन्त्य। प्रतेधारां मधुश्चत उथ्सं दुहृते अक्षितम्॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

#### ॥ नवग्रहसूक्तम्॥

आ सत्येन रर्जसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सिवता रथेनाऽदेवो यति भुवना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुक्रतुम्॥ येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत च द्विपदाम्। निष्क्रीतोऽयं यिज्ञयं भागमेतु रायस्पोषा यर्जमानस्य सन्तु॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय आदित्याय नमः॥१॥ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार रेतार्श्स जिन्वति। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः। क्षेत्रस्य पतिना वयश हिते नेव जयामिस। गामश्रं पोषयिल्वा स नौ मृडातीदृशै॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥२॥ प्रवः शुकायं भानवे भरध्व १ हव्यं मृतिं चाम्रये सुपूतम्॥ यो दैव्यानि मानुषा जनूङ्घ्यन्तर्विश्वानि विद्याना जिगाति॥ इन्द्राणीमासु नारिषु सुपलीमहमेश्रवम्। न ह्यस्या अपुरञ्चन जुरसा मर्तते पतिः॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हर्वामहे जनैभ्यः। अस्मार्कमस्तु केवेलः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥३॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम् वृष्णियम्। भवा वार्जस्य सङ्गथे॥ अप्सु मे सोमो अबवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्नि च विश्वर्शम्भुवमापश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापदी नवंपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय सोमाय नमः॥४॥

उद्बंध्यस्वाये प्रतिजागृह्येनमिष्टापूर्ते सश्सृजेथाम्यं चे। पुनेः कृण्वङ्स्त्वा पितरं युवानमन्वातारसीत्विय तन्तुमेतम्॥ \_ विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पुदम्। समूढमस्यपाश सुरे॥ विष्णौ र्रार्टमिस विष्णौः पृष्ठमिस विष्णोः श्रम्नैस्थो विष्णोः स्यूरिस विष्णौर्ध्रवमंसि वैष्णवमंसि विष्णवे त्वा। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बुधाय नमः॥५॥

बृहंस्पते अतियद्यों अहाँद्विमद्विभाति कर्तुमज्जनेषु। यद्दीद्यच्छवंसर्त-प्रजात तद्स्मासु द्रविणं घेहि चित्रम्॥ इन्द्रमरुत्व इह पाहि सोमं यथां शार्याते अपिबः सुतस्यं। तव प्रणीती तवं शूरशर्मन्नाविवासन्ति कवर्यः सुयज्ञाः॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन ्रावः। सबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवेः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पतये नमः॥६॥

शं नों देवीर्भिष्ट्य आपों भवन्तु पीत्रयै। शंयोर्भिस्नवन्तु नः॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बंभूव।

यत्कोमास्ते जुहुमस्तन्नौ अस्तु वयङ् स्योम् पतयो रयीणाम्। इमं यमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्त्रौः कविशस्ता वेहन्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय रानैश्चराय नमः॥७॥ कर्या नश्चित्र आर्भुवदूती सदावृधः सखा। कया राचिष्ठया वृता। आऽयङ्गौः पृश्चिरक्रमीद्सनन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्त्सुवः। यत्ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दामं ग्रीवास्वविचर्त्यम्। इदं ते तिद्विष्याम्यायुषो न मध्याद्याजीवः पितुमिद्धि प्रमुक्तः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥८॥ केतुं कृण्वन्नेकेतवे पेशौ मर्या अपेशसै। समुषद्भिरजायथाः॥ ब्रह्मा देवानां पदवीः केवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणांम्। इयेनो गृघ्राणाङ् स्वधितिर्वनानार् सोमः पवित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्) सचित्र चित्रं चितयन् तमस्मे चित्रेक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्। चन्द्रं र्यिं पुरुवीरं बृहन्तुं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय केतवे नमः॥९॥ ॥ ॐ आदित्यादि नवग्रहदेवंताभ्यो नमो नर्मः॥ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

#### ॥ नक्षत्रसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् – ३/प्रश्नः – १) (तैत्तिरीय संहिता काण्डम् – ३/प्रपाठकः – ५/अनुवाकः –१)

अग्निनीः पातु कृत्तिकाः। नक्षत्रं देविमिन्द्रियम्। इदमासां विचक्षणम्। हविरासं जुंहोतन। यस्य भान्ति रश्मयो यस्यं केतवः। यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वा। स कृत्तिकाभि-रिभसंवसानः। अग्निनी देवः सुविते देघातु॥१॥

प्रजापंते रोहिणी वेतु पत्नी। विश्वरूपा बृह्ती चित्रभानुः। सा नौ यज्ञस्यं सुविते दंघातु। यथा जीवेम शरदः सवीराः। रोहिणी देव्युदंगात्पुरस्तात्। विश्वां रूपाणि प्रतिमोदंमाना। प्रजापंतिश हविषां वर्धयंन्ती। प्रिया देवानामुपंयातु यज्ञम्॥२॥

सोमो राजा मृगर्शीर्षेण आगन्ने। शिवं नक्षत्रं प्रियमस्य धामे। आप्यायमानो बहुधा जनेषु। रेतः प्रजां यर्जमाने दधातु। यत्ते नक्षत्रं मृगर्शीर्षमस्ति। प्रिय॰ राजन् प्रियतमं प्रियाणाम्। तस्मै ते सोम हविषां विधेम। शं ने एधि द्विपदे शं चतुष्पदे॥३॥

आर्द्रयो रुद्रः प्रथमा न एति। श्रेष्ठो देवानां पतिरिघ्यानाम्। नक्षत्रमस्य ह्विषां विधेम। मा नेः प्रजाश्र रीरिष्-मोत वीरान्। हेती रुद्रस्य परिणो वृणक्तु। आर्द्रा नक्षत्रं जुषताश्र ह्विनीः। प्रमुञ्जमानौ दुरितानि विश्वा। अपाघश्रं सन्नुदतामरातिम्॥४॥

पुनर्नों देव्यदितिः स्पृणोतु। पुनर्वसू नः पुनरेतां यज्ञम्। पुनर्नों देवा अभियन्तु सर्वें। पुनं पुनर्वो हिवषां यजामः। एवा न देव्यदितिरनुर्वा। विश्वस्य भुत्रीं जर्गतः प्रतिष्ठा। पुनर्वसू हिवषां

वर्धयन्ती। प्रियं देवानामप्येतु पार्थः॥५॥

बृह्स्पतिः प्रथमं जायमानः। तिष्यं नक्षत्रमभि सम्बंभूव। श्रेष्ठौ देवानां पृतेनासु जिष्णुः। दिशोऽनु सर्वा अभयं नो अस्तु। तिष्यः पुरस्तादुत मध्यतो नः। बृह्स्पतिर्नः परिपातु पश्चात्। बाधेतां द्वेषो अभयं कृणुताम्। सुवीर्यस्य पत्तयः स्याम॥६॥

इदः सर्पेभ्यो ह्विरेस्तु जुष्टम्। आश्रेषा येषांमनुयन्ति चेतः। ये अन्तरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति। ते नंः सर्पासो हवमागिमिष्ठाः। ये रोचने सूर्यस्यापि सर्पाः। ये दिवं देवीमनुस् अरेन्ति। येषांमाश्रेषा अनुयन्ति कामम्। तेभ्यः सर्पेभ्यो मधुमजुहोमि॥७॥

उपहूताः पितरो ये मघासुं। मनौजवसः सुकृतः सुकृत्याः। ते नो नक्षेत्रे हवमार्गमिष्ठाः। स्वधाभिर्यज्ञं प्रयंतं जुषन्ताम्। ये अग्निद्ग्धा येऽनिन्नदग्धाः। येऽमुं लोकं पितरः क्षियन्ति। याङ्श्चे विद्मयाः उ च न प्रविद्म। मघासुं युज्ञः सुकृतं जुषन्ताम्॥८॥

गवां पितः फल्गुनीनामित् त्वम्। तद्र्यमन् वरुणिमत्र चार्रः। तं त्वी वयः सिन्तारः सनीनाम्। जीवा जीवन्तमुप संविशेम। येनेमा विश्वा भुवनानि सिन्निता। यस्य देवा अनुसंयन्ति चेतः। अर्यमा राजाऽजरुस्तु विष्मान्। फल्गुनीनामृष्मो रौरवीति॥९॥

श्रेष्ठौ देवानौ भगवो भगासि। तत्त्वो विदुः फल्गुनीस्तस्यं वित्तात्। अस्मभ्यं क्षत्रमुजर्रं सुवीर्यम्। गोमदश्चंवदुपसन्नुदेह। भगौ ह दाता भग इत्यंदाता। भगौ देवीः फल्गुनीराविवेश। भगस्येत्तं प्रसुवं गमम। यत्रं देवैः संघुमादं मदेम॥१०॥ आयांतु देवः संवितोपयातु। हिर्ण्ययेन सुवृता रथेन। वहन् हस्तर्थं सुभगं विद्यनापंसम्। प्रयच्छन्तं पपुरि पुण्यमच्छे। हस्तः प्रयंच्छ त्वमृतं वसीयः। दक्षिणेन प्रतिगृभ्णीम एनत्। दातारम्य संविता विदेय। यो नो हस्ताय प्रसुवाति युज्ञम्॥११॥

त्वष्टा नक्षत्रमभ्येति चित्राम्। सुभगं संसं युवति रोचंमानाम्। निवेश्ययन्नमृतान्मर्त्या छूथा। रूपाणि पिर्शान् भवनानि विश्वा। तन्नस्त्वष्टा तद्वं चित्रा विच्छाम्। तन्नक्षत्रं भूरिदा अस्तु मह्यम्। तन्नः प्रजां वीरवंती र सनोतु। गोभिनीं अश्वैः समनक्त यज्ञम्॥१२॥ वायुर्नक्षत्रमभ्येति निष्ट्याम्। तिग्मर्थङ्गो वृष्यो रोरुवाणः। समीरयन् भवना मात्रिश्वा। अप द्वेषा स्ति नुदतामरातीः। तन्नो वायुस्तदु निष्ट्यां शृणोतु। तन्नक्षत्रं भूरिदा अस्तु मह्यम्। तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्। यथा तरेम दुरितानि विश्वा॥१३॥

दूरम्रसम्ब्छत्रंवो यन्तु भीताः। तदिन्द्राग्नी कृणुतां तिहशाखे। तन्नो देवा अनुमदन्तु यज्ञम्। पृश्चात् पुरस्तादभयं नो अस्तु। नक्षत्राणामधिपत्नी विशाखे। श्रेष्ठाविन्द्राग्नी भुवनस्य गोपौ। विष्चः शत्रूनप्बाधमानौ। अपृ क्षुधं नुदतामर्रातिम्॥१४॥

पूर्णा पृश्चाद्वत पूर्णा पुरस्तात्। उन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय। तस्यां देवा अधिसंवसंन्तः। उत्तमे नार्क इह मदियन्ताम्। पृथ्वी सुवर्चा युवतिः सजोषाः। पौर्णमास्युदंगाच्छोभंमाना। आप्याययन्ती दुरितानि विश्वां। उक्तं दुहां यजमानाय यज्ञम्॥१५॥ ऋद्यास्म हुव्यैर्नमंसोपसद्य। मित्रं देवं मित्र्धयं नो अस्तु।

अनूराधान् ह्विषां वर्धयन्तः। श्वतं जीवेम शरदः सवीराः। चित्रं नक्षेत्रमुदंगात्पुरस्तात्। अनूराधा स इति यद्वदंन्ति। तन्मित्र एति पथिभिर्देवयानैः। हिर्ण्ययैर्वितंतैरुन्तरिक्षे॥१६॥

इन्द्रौ ज्येष्ठामनु नक्षेत्रमेति। यस्मिन् वृत्रं वृत्र् तूर्यै ततारे। तस्मिन्वयममृतं दुर्होनाः। क्षुधं तरेम् दुरितिं दुरिष्टिम्। पुरन्द्रायं वृष्भायं धृष्णवे। अषोढाय् सहमानाय मीदुषे। इन्द्रीय ज्येष्ठा मधुमदुर्होना। दुरुं कृणोतु यजमानाय लोकम्॥१७॥

मूलं प्रजां वीरवंतीं विदेय। पराँच्येतु निर्ऋतिः पराचा। गोभिर्नक्षंत्रं पराुिभः समक्तम्। अर्हर्भूयाद्यजमानाय मह्यम्। अर्हर्नो अद्य सुविते दंधातु। मूलं नक्षेत्रमिति यद्वदंन्ति। परांचीं वाचा निर्ऋतिं नुदामि। श्विवं प्रजाये शिवमस्तु मह्यम्॥१८॥

या दिव्या आपः पर्यसा सम्बभूदुः। या अन्तरिक्ष उत पार्थिवीर्याः। यास्रीमषाढा अनुयन्ति कामम्। ता न आपः राङ् स्योना भवन्तु। याश्च कूप्या याश्च नाद्याः समुद्रियाः। याश्च वैद्यान्तीरुत प्रांसचीर्याः। याश्च कूप्या याश्च नाद्याः समुद्रियाः। याश्च वैद्यान्तीरुत प्रांसचीर्याः। यास्रीमषाढा मधुं भक्षयन्ति। ता न आपः राङ् स्योना भवन्तु॥ १९॥ तन्नो विश्वे उपं श्रण्वन्तु देवाः। तद्षाढा अभिसंयन्तु यज्ञम्। तन्नक्षत्रं प्रथतां प्रयुभ्यः। कृषिर्वृष्टिर्यजमानाय कल्पताम्। द्युभाः कन्यां युवतयः सुपेर्शसः। कर्मकृतः सुकृतौ वीर्यावतीः। विश्वान् देवान् हिवषां वर्धयन्तीः। अषाढाः काममुप्यान्तु यज्ञम्॥२०॥ यस्मिन् ब्रह्माभ्यजयत्सर्वमेतत्। अमुं चं लोकमिदमूच सर्वम्। तन्नो नक्षत्रमभिजिद्विजित्यं। श्रियं दधात्वहंणीयमानम्। उभौ

लोकौ ब्रह्मणा सञ्जितेमौ। तन्नो नक्षेत्रमभिजिद्विचेष्टाम्। तस्मिन्वयं पृतेनाः सञ्जेयेम। तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्॥२१॥

शृण्वन्ति श्रोणाममृतस्य गोपाम्। पुण्यामस्या उपश्रणोमि वाचम्। महीं देवीं विष्णुपत्नीमजूर्याम्। प्रतीची मेनाश् हविषां यजामः। त्रेधा विष्णुरुरुगायो विचेक्रमे। महीं दिवें पृथिवीमन्तरिक्षम्। तच्छोणैतिश्रवं इच्छमाना। पुण्यश्र् श्लोकं यजमानाय कृण्वती॥२२॥

अष्टौ देवा वसंवः सोम्यासः। चर्तस्रो देवीर्जराः श्रविष्ठाः। ते यइं पौन्तु रजसः प्रस्तौत्। संवृत्सरीणममृतङ् स्वस्ति। युइं नः पान्तु वसंवः पुरस्तौत्। दक्षिणतौऽभियन्तु श्रविष्ठाः। पुण्यं नक्षेत्रमभि संविशाम। मा नो अरोतिरुघशुरसाऽगन्न्॥ २३॥

क्षत्रस्य राजा वर्रुणोऽधिराजः। नक्षत्राणाः श्वातिमेष्वग्वसिष्ठः। तौ देवेभ्यः कृणुतो दीर्घमायुः। श्वातः सहस्रा भेषुजानि धत्तः। यद्गं नो राजा वर्रुण उपयातु। तन्नो विश्वे अभि संयन्तु देवाः। तन्नो नक्षत्रः श्वातिमेषग्जुषाणम्। दीर्घमायुः प्रतिरद्भेषुजानि॥२४॥

अज एकपादुदंगात्पुरस्तात्। विश्वा भूतानि प्रति मोदंमानः। तस्यं देवाः प्रंसवं यन्ति सर्वै। प्रोष्ठपदासौ अमृतंस्य गोपाः। विश्वाजमानः समिधा न उग्रः। आऽन्तरिक्षमरुहृदगुन्द्याम्। तश्स्यै देवमुजमेकपादम्। प्रोष्ठपदासो अनुयन्ति सर्वै॥२५॥

अहिर्बुधियः प्रथमा न एति। श्रेष्ठौ देवानामुत मानुषाणाम्। तं ब्राह्मणाः सोमपाः सोम्यासः। प्रोष्ठपदासौ अभिरंक्षन्ति सर्वै। चत्वार् एकमि कमें देवाः। प्रोष्ठपदा स इति यान् वदिन्ति। ते बुिन्नयं परिषद्यर्र् स्तुवन्तः। अहिर्रं रक्षन्ति नर्मसोपसर्य॥२६॥

पूषा रेवत्यन्वेति पन्थाम्। पुष्टिपती पशुपा वार्जबस्त्यौ। इमानि ह्व्या प्रयंता जुषाणा। सुगैर्नो यानैरुपयातां यज्ञम्। क्षुद्रान् पशून् रक्षतु रेवती नः। गावौ नो अश्वार अन्वेतु पूषा। अञ्चर रक्षन्तौ बहुधा विरूपम्। वाजर्र सनुतां यर्जमानाय यज्ञम्॥२७॥

तद्िश्वनावश्वयुजोपयाताम्। शुभुङ्गिमिष्ठौ सुयमेभिरश्वैः। स्वं नक्षत्रश् हिवषा यजन्तौ। मध्वासम्पृक्तौ यजुषा समक्तौ। यौ देवानां भिषजौ हव्यवाहौ। विश्वस्य दूतावमृतस्य गोपौ। तौ नक्षत्रं जुजुषाणोपयाताम्। नमोऽश्विभ्यां कृणुमोऽश्वयुग्भ्याम्॥२८॥

अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु। तद्यमो राजा भगवान् विचेष्टाम्। लोकस्य राजां महतो महान् हि। सुगं नः पन्थामभयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षेत्रे यम एति राजां। यस्मिन्नेनम्भयिष्चन्त देवाः। तदस्य चित्रश्हविषां यजाम। अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु॥२९॥

निवेशनी सङ्गमनी वसूनां विश्वा रूपाणि वसून्यावेशयन्ती। सहस्रपोष स्पुभगा रर्गणा सा न आगन्वचैसा संविदाना॥ यत्ते देवा अद्धुर्भाग्धेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा। सा नौ युइं पिपृहि विश्ववारे रुपिं नौ धेहि सुभगे सुवीरम्॥३०॥

### ॥ गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत्॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजेत्राः। स्थिरेरङ्गैस्तुष्टुवाः संस्तुन्भिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रौ वृद्धश्रेवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यौ अरिष्टनेभिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

ॐ नर्मस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वंमिस। त्वमेव केवछं कर्तांऽसि। त्वमेव केवछं धर्तांऽसि। त्वमेव केवछं हर्तांऽसि। त्वमेव सर्वं खिल्वदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मांऽसि नित्यम्॥१॥

ऋतं विचा। सत्यं विचा॥२॥

अवं त्वं माम्। अवं वक्तारम्। अवं श्रोतारम्। अवं दातारम्। अवं धातारम्। अवानूचानमंव शिष्यम्। अवं पश्चात्तात्। अवं पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अवं दक्षिणात्तात्। अवं चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहिं समन्तात्॥३॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सचिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मसि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि॥४॥

सर्वं जगदिदं त्वत्त्वों जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्त्वंस्तिष्ट्वि। सर्वं जगदिदं त्विय लयमेष्यिति। सर्वं जगदिदं त्वियं प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नुभः। त्वं चत्वारि वाक्परिमितां पदानि॥५॥ त्वं गुणत्रेयातीतः। त्वम् अवस्थात्रेयातीतः। त्वं देहत्रेयातीतः। त्वं कालत्रेयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितौऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रेयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥६॥

गणादिं पूर्वमुचार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अधैन्दुलिस्तम्। तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चौन्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादेः सन्धानम्। सश्हिता सन्धिः। सेषा गणेशविद्या। गणेक ऋषिः। निचृद्वायंत्रीच्छन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नर्मः॥७॥

एकदन्तायं विद्यहें वकतुण्डायं धीमहि। तन्नों दन्ती प्रचोदयात्॥८॥ एकदन्तं चंतुर्हस्तं पाशमंङ्कश्रधारिणम्। रदं च वर्रदं हस्तैर्बिश्राणं मूषकध्वजम्॥ रक्तं लम्बोदंरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तंगन्धानुंलिप्ताङ्गं रक्तपुष्यैः सुपूजितम्॥

भक्तां नुकिम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी यौगिनां वर्रः॥९॥ नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः॥१०॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयायं कल्पते। स सर्वविद्वेनें बाध्यते। स सर्वतः सुर्वमेधते। स पञ्चमहापापात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाश्चयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाश्चयति। सायं प्रातः प्रयुज्जानो अपापो भ्वति। सर्वत्राधीयानोऽपविद्वों भवति। धर्मार्थकाममोक्षं चं विन्द्ति। इदमथर्वशीर्षमशिष्यायं न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेनं साध्येत्॥११॥

अनेन गणपितमभिषिञ्चिति स वाग्मी भविति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपित स विद्यावान् भविति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यान्न बिभेति कद्यंचनेति॥१२॥

यो दूर्वाङ्करैर्यजित स वैश्रवणोपमो भ्वति। यो ठाजैर्यजित स यशौवान् भ्वति स मेधावान् भ्वति। यो मोदकसहस्रेण यजित स वाञ्छितफलमेवाप्रोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजित स सर्वं लभते स सर्वं लभते॥१३॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्याहियत्वा। सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासिन्नधौ वा जत्वा सिद्धमन्त्रौ भवति। महाविद्वात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। संविद्धवित।

य एवं वेद। इत्युपिनिषंत्॥१४॥ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनाऽवधीतमस्तु मा विद्विषावहैं॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥